श्री बाहुबली भगवान, श्री श्रवणबेलगोला जी

RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

श्री ऊर्जयंत गिरनारजी

वर्ष : 11	अंक : 7	मुम्बई, अक्टूबर 2021	पृष्ठ : 36	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 11	ISSUE : 7	MUMBAI, OCTOBER 2021	PAGES : 36	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2547

श्री आदिनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, सरवार, राजस्थान

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारुप

मंगल आशीर्वाद

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

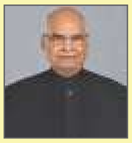

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रूप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रुपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रुप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारुप

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संगहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन मुख्य संरक्षक | **राजकुमार जैन** अध्यक्ष | **सतीश चन्द जैन SCJ** अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था | **नरेश जैन** (कामधेनु), दिल्ली अध्यक्ष—अकाउंट उपसमिति | **अनिल जैन** कार्याध्यक्ष | **मुकेश जैन** कोषाध्यक्ष | **राकेश जैन** निर्माण समिति | **राजेन्द्र जैन** मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi, Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in

Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550

अध्यक्षीय निवेदन

ज्ञातव्य है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी समग्र दिगम्बर जैन समाज की एक शीर्षस्थ प्रतिनिधि संस्था के रूप में सन १९०२ से कार्यरत है। कमेटी द्वारा भारत में फैले एक-एक तीर्थ का संरक्षण, संवर्धन और उनका सम्यक् विकास प्रांतीय समितियों के सहयोग से किया जा रहा है। यह चिंतनीय है कि हमारे तीर्थों पर हकों एवं अधिकारों को लेकर विवाद होने लगे हैं, अतिक्रमण की घटनाएँ जोर पकड़ने लगी हैं इसके लिए कोर्ट-कचहरियों में मुकदमें होने लगे हैं। श्री तीर्थराज सम्मेदशिखरजी, श्री गिरनारजी, श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर, श्री ऋषभदेव (केशरियाजी) आदि अनेक क्षेत्रों से सम्बंधित मुकदमें उच्च एवं सर्वोच्च न्यायालयों में चल रहे हैं, जिसमें अब तक करोड़ों रूपये खर्च हो चुके हैं। अनेक मुकदमों में कमेटी को भारी सफलताएँ भी मिली हैं। श्री सम्मेदशिखरजी का हमारा अहिंसक संघर्ष अब एक निर्णायक दौर में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के सम्मुख सुनवाई के लिए बोर्ड पर आया है। जिसके लिए भारत के वरिष्ठ विधि वेत्ताओं की सेवाएं ली जा रही है।

बंधुओं ! **तीर्थ हमारी श्रृद्धा एवं निष्ठा के सर्वोपरि केंद्र हैं। तीर्थों से ही धर्म को जीवन में स्वरूप मिलता है। वे धर्म और संस्कृति के नाभि स्थल हैं।** ये ऐसे पवित्र स्थल हैं जिन्हें हमारे तीर्थंकरों, भगवंतों और उनके लघु नंदनों ने अपनी पूजा, आराधना, सतत तपश्चर्या एवं ध्यान साधना से ऊर्जस्वित किया है। इसलिए सभी तीर्थक्षेत्र, पुण्य स्थलों के रूप में पूजनीय हैं एवं वन्दनीय हैं इसलिए इनकी रक्षा करना हमारा प्रथम दायित्व होता है।

जैनों का सबसे प्रसिद्ध एवं प्रमुख तीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी है जिसपर जैन समाज की दोनों आम्नाय दिगम्बर एवं श्वेताम्बरों की अपार श्रृद्धा है। ऐसे पावन तीर्थ की वंदना के लिए दोनों आम्नाय के श्रद्धालुगण देश-विदेश से क्षेत्र पर पधारते हैं। क्षेत्र पर पधारे श्रृद्धालुओं की सेवा-व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी दोनों पक्षों की संस्थाओं की रहती है। साथ ही पहाड़ की सुरक्षा-व्यवस्था आदि की जिम्मेदारी भी दोनों पक्षों की संस्थाएं बखूबी निभाती आ रही है। सम्मेदशिखरजी तीर्थ सभी के लिए वन्दनीय, टोंकों पर विराजमान चरणचिन्ह सभी के लिए पूज्यनीय हैं चाहे वह किसी भी आम्नाय व पंथ को मानने वाले हों। सम्मेदशिखरजी तीर्थ की भाव सहित वंदना करने मात्र से ही अनंत कर्मों की निर्जरा होती है। ऐसे परम पावन तीर्थ पर विडम्बना यह है कि दोनों सम्प्रदाय इस तीर्थ पर एकाधिपत्य करने की कोशिश में विवादों के दलदल में फंसे हैं। परन्तु सम्मेदशिखरजी तीर्थ पर किसी एक आम्नाय या पंथ का अधिपत्य हो यह संभव नहीं है इसे सभी को स्वीकारना होगा। यह तीर्थ एक अनादिनिधन जैन तीर्थ है और सभी को इस तीर्थ पर दर्शन-वंदन करने का अधिकार है। सम्मेदशिखरजी क्षेत्र पर दिगम्बर एवं श्वेताम्बर के मध्य अनेक मुद्दों पर विवाद प्रकरण चले आ रहे हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी ने हमेशा से ही इस बात पर बल दिया कि दोनों पक्ष आपस में तीर्थ से जुड़े विवाद को सुलझाये।

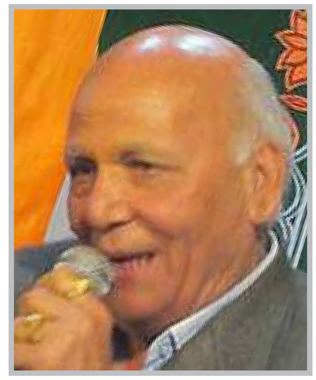

तीर्थक्षेत्र कमेटी कभी किसी तीर्थों के विवाद को कानूनी तरीके से लड़ना नहीं चाहती परन्तु जब तीर्थ के मूल स्वरूप से छेड़छाड़ या अनधिकृत रूप से कब्ज़ा करने की कोशिश की जाती है तब तीर्थक्षेत्र कमेटी का तीर्थ की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाना परम कर्तव्य बन जाता है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की हमेशा से ही भावना रही है कि जैन तीर्थों जिनमें सबसे प्रमुख तीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी से जुड़े जैन सम्प्रदायों के आपस के विवाद सुलझें और इसी भावना के साथ हम वर्तमान में सम्मेदशिखरजी के प्रकरणों को सुलझाने का प्रयास कर रहे हैं। सम्मेदशिखरजी पहाड़ टोंकों पर विराजमान चरणचिन्ह आदि के मूल स्वरूप से कोई छेड़छाड़ न करते हुए टोंकों की मरम्मत, पहाड़ की सुरक्षा व्यवस्था आदि का कार्य दोनों आम्नाओं की संस्थाएं मिलजुल साथ में करें और तीर्थ के विकास की योजनाओं में एक दूसरे का सहयोग करें, यही वर्तमान की आवश्यकता है।

अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कुछ ही दिनों के बाद दीपावली पर्व का आगमन हो रहा है। कार्तिक अमावस्या के दिन २४ वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने पावापुर की पावन भूमि पर प्रातः काल की बेला में घातियाँ कर्मों का क्षय करके अक्षयपद (मोक्ष) को प्राप्त किया एवं इसी दिन सायं काल की बेला में गौतम गणधर ने भी मोक्ष रुपी लक्ष्मी को प्राप्त किया। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद देवताओं ने उस नगरी को दीपों से सजाकर निर्वाण महोत्सव मनाया था और तब से हम इसे दीपावली के रूप में मनाते हैं। अतः आप सभी को दीपावली पर्व की अनेकानेक शुभकामनायें ! भगवान महावीर के निर्वाण के समय से ही जैन पंचाग का प्रारम्भ होता है जो कि सबसे प्राचीन संवत है।

अंत में भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव एवं वीर निर्वाण संवत २५४८ नूतन वर्ष की आप सभी को अनंत शुभकामनायें एवं बधाई।

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष ११ अंक ७ अक्टूबर २०२१

श्री शिखरचन्द पहाड़िया
अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)
उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी
उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा
उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला
उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)
कोषाध्यक्ष

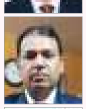
श्री खुशाल जैन (सी.ए.)
मंत्री

श्री विनोद कोयलावाले
मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
मंत्री

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर
सम्पादक
उमानाथ दुबे
सम्पादकीय सलाहाकार
डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली
श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल
श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई
श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर
प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद

तीर्थ विकास हेतु पैसा ही नहीं लगन एवं समर्पण भी जरूरी	6
बुंदेलखंड के लाल क्षु. श्री गणेशप्रसाद वर्णी जी	7
संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर: अनुपम एवं आदर्श संत	9
ज्ञानमती माताजी की कृतियाँ सभी निराली हैं	11
संस्कृति संरक्षण में महिलाओं का योगदान	14
वाराणसी की प्राचीन जैन संस्कृति एवं परम्परा	17
दिगम्बर जैन नसियां कीर्ति स्तम्भ, आमेर	20
तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के पदाधिकारियों का मांगीतुंगी... आदि तीर्थक्षेत्रों का भ्रमण	28
हमारे नए बने सदस्य	32
अखिल भारतीय निबंध (व्यवहारिक सुझाव) प्रतियोगिता	34

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:
1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुम्बई-400004
फोन : 022-23878293 फैक्स : 022-2385 9370
website : www.tirthkshetracommittee.com, e-mail : tirthvandana4@gmail.com, Whatsapp No. : 7718859108

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विनम्र अनुरोध

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी स्थापना काल से ही दिगम्बरों के अधिकार की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रही है और एक लम्बे समय से संघर्षरत भी है। हमारा अहिंसक संघर्ष अब निर्णायक स्थिति में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के सम्मुख पहुँच चुका है और दिनांक ३० सितम्बर २०२१ से लगातार केसेस चल रहे हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपनी ओर से सुप्रीम कोर्ट के अच्छे से अच्छे अधिवक्ताओं के माध्यम से अपना पक्ष सशक्तता के साथ प्रस्तुत करेगी इसके लिए भारतवर्ष के वरिष्ठ अधिवक्ताओं की सेवाएं ली जा रही है।

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी हम सबका है। और हमारी पहचान का एक प्रखर नक्षत्र भी है। वर्तमान में आये इस संकट का हमें मिलजुलकर सामना करना है, और विजय श्री को प्राप्त करना है। इस संवेदनशील समस्या का समाधान आपके सहयोग से ही संभव है कहीं ऐसा न हो कि हमारी तनिक सी भूल के लिए आगे आने वाली पीढ़ी हमें माफ़ न करें।

अतएव हमारा आपसे विनयपूर्वक अनुरोध है कि अपनी पहचान की रक्षा के लिए इस अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग में मुक्तहस्त से दान देकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रयत्नों को मजबूत कीजिए।

हमारा विश्वास है कि आपका वात्सल्य और विश्वास हम पर बना रहेगा एवं आपका आर्थिक सहयोग तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा चलाये जा रहे इस कार्य संघर्ष को बल प्रदान करेगा।

संतोष जैन पेंढारी
महामंत्री

कृपया दान राशि **भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी** के नाम से
बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी. रोड शाखा, ब्रांच मुंबई-400004
खाता क्र. 13100100008770, **IFSC CODE:** BARB0VPROAD

में जमा कराकर उसकी मुंबई कार्यालय (टेलीफोन 022-23878293) को सूचना देने की कृपा करें।

तीर्थ विकास हेतु पैसा ही नहीं लगन एवं समर्पण भी जरूरी।

"............घनात् धर्मः ततः सुखम्"

यह कहावत जन सामान्य में बहुप्रचलित है एवं सामान्यतः सत्य भी है। धर्म कार्य के लिए धन की आवश्यकता होती है यह बात अंशतः सही है पूर्णतः नहीं। निर्धन एवं अल्प-आय के व्यक्ति भी धर्म कार्य सफलता एवं निष्ठा के साथ करते रहे हैं एवं आज भी कर रहे हैं। हमारे कई तीर्थों पर बने मन्दिर पाई-पाई जोड़कर अल्प-आय वाले व्यक्तियों ने बनवाये हैं जो उनकी तीर्थ भक्ति एवं समर्पण के प्रतीक हैं। वर्तमान में हमारे अतिशय क्षेत्रों पर तो काफी यात्री आते हैं किन्तु अनेक कल्याणक क्षेत्र ऐसे भी है जहाँ बहुत कम यात्री आते हैं। कम यात्री संख्या के कारण दान भी कम आता है एवं क्षेत्र के विकास की योजनाएँ धनाभाव में लम्बित ही बनी रहती है। कभी-कभी जब कोई संस्था या समृद्ध परिवार या परिवारों का समूह जीर्णोद्धार या नवीन निर्माण का संकल्प लेकर आगे आता है तब विकास की धारा चल पड़ती है, किन्तु सामान्य स्थिति में नियमित रख-रखाव भी नहीं हो पाता है। क्षेत्र के पदाधिकारी प्रबन्धक या कर्मचारी (जो 2-3 ही होते है) भी इस स्थिति से प्रसन्न नहीं रहते किन्तु विवश होते हैं। इस सन्दर्भ में क्षेत्र पर ही या 1-2 किमी. के दायरे में रहने वाले पदाधिकारियों/प्रबन्धक/कर्मचारियों से मेरा अनुरोध है कि अत्यन्त अल्प व्यय में होने वाले निम्न कार्यों पर ध्यान दें, ये उपाय यात्री संख्या/दान राशि में वृद्धि अवश्य करेंगे।

1. यत्र-तत्र-सर्वत्र भगवान महावीर निर्वाण दिवस (दीपावली) के आगमन की तैयारियाँ शुरू हो गई हैं। हमारे कम यात्री संख्या वाले तीर्थों को पूरे उत्साह के साथ नये वर्ष वी.नि.सं 2548 के स्वागत की तैयारी करनी चाहिए। सम्पूर्ण परिसर की सफाई पूरे मनोयोग से करनी चाहिए। परिसर बड़ा होने एवं खर-पतवार अधिक होने पर उद्यान या वानिकी के विशेषज्ञों की निःशुल्क सेवायें प्राप्त की जा सकती है। परिसर की साफ सफाई के बाद मन्दिर जी एवं अन्य भवनों की बजट के अनुसार एवं पूर्व स्थिति के अनुसार चूना, डिस्टेम्पर आदि से पुताई करावें। इससे परिसर रोगाणु/विषाणु मुक्त होने के साथ-साथ ही भव्य भी लगने लगता है। पुताई के समय ही छतों की सफाई, पानी निकासी के स्थानों, जल भराव के स्थलों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

2. पारम्परिक रूप से दसलक्षण पर्व के दिनों में वेदी जी की सफाई एवं मूर्तियों का मंजन (मार्जन) हुआ होगा तथापि आवश्यकतानुसार इस पर भी ध्यान दें। रीठा आदि पारम्परिक रीतियों से अच्छी सफाई हो जाती है।

3. मंदिर के द्वार आदि को नये वंदनवार से सजाना चाहिए। हमारे इस काम में बहनें बहुत सहयोग कर सकती हैं। उन्हें अपनी कला के प्रदर्शन एवं मंदिर की सेवा की संतुष्टि दोनों एक साथ प्राप्त होगी।

4. हरियाली एवं फुलवारी अशान्त मन को सदैव शांति देती है। अभी जमीन में नमी है अतः मन्दिर जी के पास कच्ची भूमि देखकर उसे व्यवस्थित कर क्यारी बना दें। कम मेहनत चाहने वाले फूलदार पौधे लगा दें। क्यारी के चारों ओर पुरानी ईंटों या पत्थर के बेकार टुकड़ों से 4-5 इंच की मेड़ बना दें। रोज एक-दो बाल्टी पानी देने से वह क्यारी सदैव प्रसन्नता देगी। क्षेत्र पर रहने वाले कर्मचारी यह जिम्मेदारी लें तो उन्हें आनन्द भी आयेगा एवं यात्री भी उनकी तारीफ करेंगे। वक्त जरूरत आपको फूल भी सुगमता से उपलब्ध रहेंगे।

5. मन्दिर या धर्मशाला के पास रखे वाटर कूलर या हैन्डपम्प से बहने वाला पानी अथवा मंदिर में तैयारी घर से बहने वाले पानी को व्यर्थ न जाने दें एतदर्थ उसे किसी पेड़ या क्यारी की ओर मोड़ देना चाहिए। इस पानी के स्रोत से 5-10 फीट की दूरी पर ही छोटी सी क्यारी बनाना चाहिए वहाँ पर पौधों की सिचाँई अपने आप होती रहेगी। गन्धोदक का विसर्जन भी उसी क्यारी में किया जा सकता है बशर्ते उसमें पैर न पड़े या अविनय न हो।

6. तीर्थ के द्वार से मन्दिर तक के मार्ग के दोनों ओर पंक्तिबद्ध वृक्षों की श्रृंखला तीर्थ की आभा को कई गुणा बढ़ायेगी। एक बार वृक्ष लगा देने पर 4-5 वर्ष देखभाल करनी पड़ती है फिर तो वे स्वयं बढ़ते रहते हैं।

7. पत्तियों के कचरे का उपयोग हरी/कम्पोस्ट खाद बनाने में किया जा सकता है। यह खाद क्यारी एवं वृक्षों दोनों के काम आयेगी।

8. क्षेत्र के कागजातों को सम्हाल कर भूमि को सदैव अतिक्रमण मुक्त रखना चाहिए। तार फैन्सिंग एवं हैज इसमें सहायक रहते हैं।

9. धर्मशालाओं की बिजली फिटिंग, नल फिटिंग एवं हाउस कीपिंग पर ध्यान दें। चंद घंटों के लिए आने वाले यात्री भी वहाँ सुख की अनुभूति करें ऐसा प्रयास होना चाहिए। ये सुविधायें सशुल्क रखें।

कहने का आशय यह है कि तीर्थ के विकास के लिए सदैव बहुत बड़े व्यय की जरूरत नहीं है। थोड़े से समर्पण एवं सक्रियता से हम उसकी आभा बढ़ा सकते है। आज का युवा, जो सम्पन्न भी है, कंक्रीट के जंगल से निकलकर कुछ समय प्रकृति की गोद में बिताना चाहता है। यदि हम अपने तीर्थ परिसरों को हरीतिमा से युक्त, फूलों एवं पौधों से सुसज्जित, साफ सुथरा बनायेंगे तो वे आकर्षित होकर आयेंगे एक बार चलन-चल निकला तो आपके साधन भी बढ़ेंगे।

हाँ! एक बात और परिसर में ही निवास करने वाले किसी जैन बन्धु (कर्मचारी) के परिवार को कैन्टीन चलाने की प्रेरणा दें जिससे यात्रियों को शुद्ध भोजन/जलपान की सुविधा मांग पर मिल सके। हमेशा भोजन बनाया जाये ऐसा जरूरी नहीं। जहाँ नियमित यात्री आते हैं वहाँ की बात अलग है वरना मांग पर उपलब्ध करने की व्यवस्था बनायें। परिवार भी खुश एवं यात्री भी खुश। क्षेत्र की कमेटी को प्रारम्भ में सहयोग देना होगा। मुझे विश्वास है कि अल्प विकसित या अविकसित तीर्थ इस पद्धति का अनुकरण अपने क्षेत्र की यात्री संख्या में वृद्धि कर सकते है। माउथ पब्लिसिटी बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। इससे आपका एवं आपके तीर्थ दोनों का यश बढ़ेगा।

तीर्थ के पदाधिकारी तीर्थ को अपने घर के समान दीपावली पर सजायें अन्य महानुभाव भी सहयोग दें। बूँद-बूँद से घड़ा भरता है। जरूरत पड़ने पर भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी भी आपकी मदद करेगी। आप उनके पदाधिकारियों को समय समय पर आमंत्रित करते रहें। महाराष्ट्र के समान आंचलिक समितियों के भी सतत भ्रमण कार्यक्रम आयोजित करें तो विकास को गति बढ़ेगी। सब काम पैसे से नहीं होते। यदि आपका समर्पण होगा तो मात्र 20-30 हजार में उक्त सब व्यवस्थाएं बन जायेगी। दीपावली अल्प विकसित तीर्थों के पथ को आलोकित करे इसी मंगल भावना के साथ।

डॉ. अनुपम जैन, ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर,
इन्दौर-452 009 (म.प्र.) मो.: 94250 53822

श्री गणेशप्रसाद वर्णी जी की जन्मजयंती 25 सितंबर 2021 पर विशेष :

बुंदेलखंड के लाल क्षु. श्री गणेशप्रसाद वर्णी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में जगायी थी अनोखी अलख

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

क्षुल्लक श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी एक ऐसा नाम जिन्होंने अनेक संघर्षों से जूझते हुए शिक्षा की अनोखी अलख जगाई। उनका जीवन अनेक उतार -चढ़ाव से युक्त विविध दृष्टियों से बहुरंगी रहा। एक सामान्य से अति-सामान्य युग-पुरुष के रूप में उभरे वर्णी जी का जन्म सन् १८७४ में उत्तर प्रदेश में ललितपुर जिला अन्तर्गत हंसेरा ग्राम (मड़ावरा के निकट) में एक वैष्णव परिवार में हुआ। आपकी धर्ममाता चिरोंजाबाई थीं। वे बहुत धर्मात्मा और त्याग की मूर्ति थीं। अपनी निरीह और कष्ट -सहिष्णु वृत्ति के बलपर गणेशप्रसाद जी वर्णी चिरोंजा बाई को धर्ममाता के रूप में और उनकी लाखों की संपत्ति सुलभ हो जाने पर भी वे उससे दूर ही रहे। इतना ही नहीं वर्णी जी न्यायाचार्य होते हुए ही त्याग की ओर कदम बढ़ाते हैं और आजीवन ब्रह्मचर्य की विधिवत दीक्षा भी लेते हैं। नगरीय क्षेत्र सुलभ होते होने पर भी गणेशप्रसाद जी वर्णी ग्रामों को अपना कार्यक्षेत्र बनाते हैं और सैकड़ों ग्रामों में पाठशालाएं स्थापित करा देते हैं। आपकी जैनधर्म में श्रद्धा का कारण महामन्त्र णमोकार था, क्योंकि णमोकार मन्त्र ने उन्हें बड़ी - बड़ी आपत्तियों से बचाया था तथा आपने पद्मपुराण ग्रंथ से प्रभावित होकर रात्रि भोजन का त्याग किया।

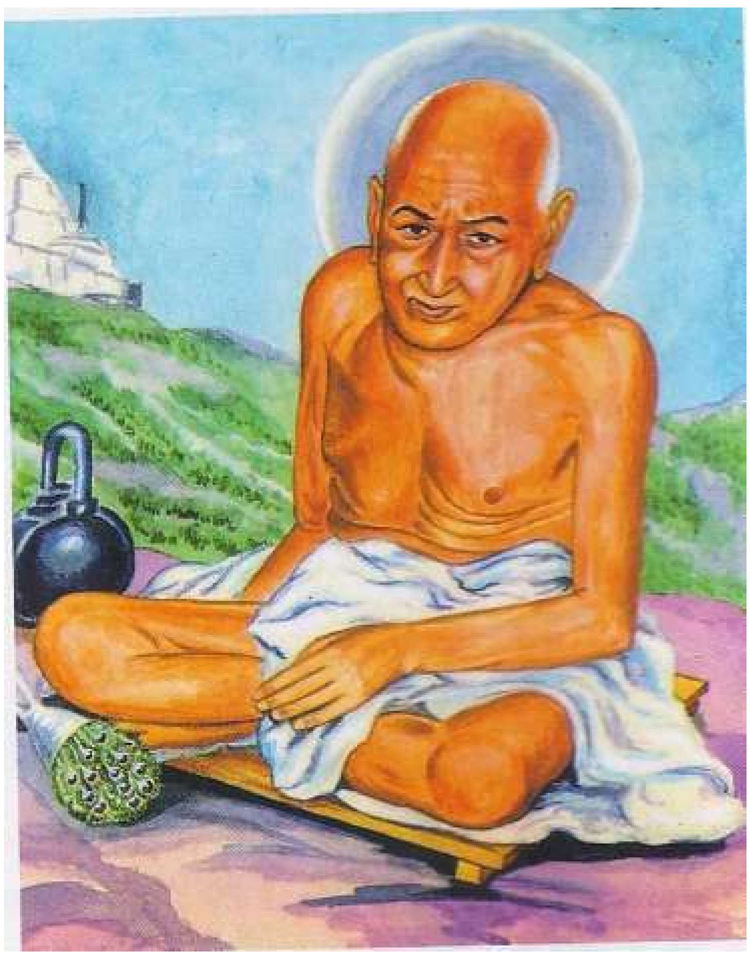

आपने १९४७ में जैन श्रावक के उत्कृष्ट व्रत स्वरूप ग्यारह प्रतिमा (क्षुल्लक दीक्षा) धारण की थी। वर्णीजी ने ५ सितम्बर, १९६१ को ईसरी में सल्लेखनापूर्वक देह का त्याग किया।

वर्णी जी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से सैंकड़ों पाठशालाएँ, विद्यालय और महाविद्यालय खुले। वर्तमान में जितने भी विद्वान् देखे जाते हैं, वह उनके अज्ञान अन्धकार मिटाने के प्रयास का सुफल है।

पूज्य वर्णी जी के दयालुता, निर्लोभता, दृढ़ता आदि गुणों की अपेक्षा उनकी अजातशत्रुता लोकोत्तर है। पूरे जीवन संघर्ष करके भी इन महानुभाव ने किसी के प्रति द्वेषभाव अपने मन में कैसे नहीं आने दिया? यह एक रहस्य है। **'दोष से घृणा करो, दोषी से नहीं'** इसका कार्यरूप देखना है तो वर्णी जी के जीवन को देखना चाहिए। पूज्य वर्णी जी जैन प्राच्य विद्याओं, विद्यालयों के महान उद्धार कर्ता थे। इन्होंने शिक्षा जगत में महान क्रांति की। इन्होंने बुंदेलखंड की अवनत दशा को बड़ी गहराई से देखा -परखा और समझा था।

पूज्य वर्णी जी का पूरा जीवन कथनी और करनी की एकरूपता का साक्षी है। एक ही जीवन में साधारण से असाधारण कैसे बना जा सकता है इसको देखना है तो वर्णी जी के जीवन को देखा जा सकता है। धर्म और समाज के नाम पर प्रचलित रूढ़ियों ने युवक गणेशप्रसाद के हृदय में धर्म के ज्ञान की ऐसी उत्कट इच्छा उत्पन्न की कि वे संस्कृत पढ़ने के लिए मुंबई, खुर्जा, जयपुर, मथुरा आदि नगरों को सब प्रकार के कष्ट उठाते हुए जाते हैं। हजारों मील पैदल चलते हैं तथापि ज्ञान-पिपासा शांत न हुई तो संवत 1961 में काशी पहुँचते हैं।

सर्व विद्या की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध काशी में पूज्य वर्णी जी को अध्ययन के दौरान अनेक अपमान -जनक विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। पर उन्होंने हार नहीं मानी, उन्होंने जिस दृढ़ इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प से काशी में 1905 में स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थापना की, वह अपने आप में एक मिशाल है। उन्होंने प्रथम दान में प्राप्त मात्र एक रुपये के 64 पोस्टकार्डों में समाज के श्रेष्ठियों एवं विद्या-प्रेमियों को लिखकर इस महाविद्यालय की स्थापना कराई। वर्णी जी द्वारा स्थापित श्री स्याद्वाद

महाविद्यालय से निकले स्नातकों ने ही जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में जिस भूमिका का निर्वाह किया है, वह जैन इतिहास की महत्त्वपूर्ण धरोहर है। यह महाविद्यालय अपने स्वरूप के अनुसार भारतीय विद्याओं के विकास में मील का पत्थर साबित हुआ है। खासकर जैनधर्म, दर्शन, साहित्य और संस्कृति के लिए विशेष योगदान रहा है। सैकड़ों चोटी के विद्वान एवं श्रमण इस संस्था की देन हैं। परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के गुरु परम पूज्य आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज ब्र. भूरामल जी ने भी इसी महाविद्यालय में अध्ययन किया था। भारत के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में यहां के विद्यार्थियों ने जो योगदान दिया है वह अपने आप में गौरवशाली है। सन 1921 के असहयोग आंदोलन, 1932 के सत्याग्रह, 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में यहां के अनेक छात्रों ने अपनी अहम भूमिका निभायी है। 1942 जिसे हम अगस्त आंदोलन के नाम से जानते हैं, में तो यह महाविद्यालय विद्यार्थियों का शस्त्रागार ही बन गया था। वर्णीजी ने एक बार जबलपुर में हो रही आमसभा में आजादी के पुजारियों की सहायतार्थ अपनी चादर समर्पित की थी। इस चादर से उसी क्षण तीन हजार रुपये की मिली राशि ने सभा को आश्चर्यचकित कर दिया। समाजोद्धार और जिनशासन की प्रभावना हेतु वे लोगों में सत-शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना आवश्यक मानते थे, क्योंकि सत-शिक्षा ही उन्नति की ओर ले जाती है। इसलिये उन्होंने जगह-जगह पाठशालाएँ, विद्यालय, महाविद्यालय, छात्रावास, गुरुकुल आदि शैक्षणिक संस्थाओं को स्थापित करने की प्रेरणा दी। उन्होंने वाराणसी में 1905 में स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थापना की, इसके साथ ही साढूमल जिला ललितपुर, बरुआसागर जिला झांसी, सागर, द्रोणगिरि, आहार जी, मड़ावरा, मलहरा, पटनागंज, शाहपुर, जबलपुर, कटनी, ललितपुर, नैनागिर, पपौरा जी आदि अनेक स्थानों पर पाठशालाएं, विद्यालय खुलवाए। इन संस्थाओं में जैनदर्शन, न्याय, साहित्य, व्याकरण, प्राकृत, संस्कृत आदि प्राच्य विद्याओं के विषयों में उच्च शिक्षा का अच्छा प्रबंध किया गया। बुंदेलखंड के बाहर भी वर्णी जी की सत्प्रेरणा से अनेक विद्यालय और महाविद्यालय स्थापित हुए। जिनमें जैन गुरुकुल हस्तिनापुर, कुन्दकुन्द कालेज खतौली, महिला महाविद्यालय, गया आदि प्रमुख हैं। दिल्ली, फिरोजाबाद, इटावा, सहारनपुर आदि अनेक स्थानों पर वर्णी जी की प्रेरणा से शिक्षण संस्थाएं स्थापित हुईं। आपने अपने सम्यक् पुरुषार्थ से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बीएचयू में जैन विद्या सम्बन्धी पाठ्यक्रम प्रारम्भ कराया था।

वर्णी जी द्वारा स्थापित इन संस्थाओं से निकले स्नातकों ने देश की शासकीय, अशासकीय और शैक्षणिक, सामाजिक आदि संस्थाओं तथा देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में सेवारत होकर अपनी अर्जित क्षमताओं से देश एवं समाजोत्थान के कार्य सम्पन्न किये और कर रहे हैं। अनेक विद्वानों ने जैन आगम के संरक्षण, संपादन आदि एवं उद्धार का महनीय कार्य सम्पन्न किया। जैन आगम का संकलन, संपादन, संसोधन, अनुवाद और प्रकाशन कराके शास्त्र भंडारों में बंद शास्त्रों को सर्वसुलभ बनाया। वर्णी जी द्वारा समाज में सत-शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण ही बुंदेलखंड का तो मानो कायाकल्प ही हो गया।

विनोबा भावे जी ने वर्णीजी को अपना अग्रज माना और उनके चरण स्पर्श किए और अनेक बार उनका सान्निध्य प्राप्त किया।

आज जो प्राच्य भाषाओं एवं विद्याओं के अध्ययन अध्यापन में रुचि बड़ी है, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राच्य विद्याओं को पढ़ने की रुचि जाग्रत हुई, यह सब पूज्य वर्णी जी की ही अमूल्य, अनमोल देन है। पूज्य वर्णी जी का भारतीय प्राच्य विद्याओं के संरक्षण और सम्वर्धन में अनुकरणीय योगदान सदैव इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। आज जरूरत है उनके पद चिन्हों पर चलने की और उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं के संरक्षण और संवर्धन की।

पूज्य गणेशप्रसाद जी वर्णी जी ने जो हमें दिया उसे हम कभी भी भुला नहीं सकते। भले ही मैंने पूज्य वर्णी जी को प्रत्यक्ष देखा न हो पर उनकी **'मेरी जीवन गाथा'** पढ़कर उनके विशाल, बेमिसाल और अद्भुत व्यक्तित्व ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। मेरा सौभाग्य रहा है कि मैंने अपनी शिक्षा पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी द्वारा स्थापित विद्यालयों-छात्रवासों में ही पूर्ण की है, मैं आज जो कुछ हूँ इन्हीं विद्यालयों के कारण ही हूँ। मेरे आदर्श हैं पूज्य वर्णी जी। 20शताब्दी के पूर्वार्ध में जैन समाज एवं खासतौर पर बुंदेलखण्ड क्षेत्र में शिक्षा के प्रचारक—प्रसारक, निर्भीक, दृढ़निश्चयी, कुरीतियों के विरोधी, सामाजिक—सौहार्द्र के लिए अपना जीवन समर्पित कर देने वाले महापुरुष थे पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी। इनकी समग्र जीवनगाथा आज भी जन—जन के लिए प्रेरक है। आपका व्यक्तित्व भारत के शैक्षिक एवं सामाजिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किए जाने योग्य है। उनका अवदान अविस्मरणीय है।

पूज्य वर्णी जी की जन्म जयंती पर उनके चरणों में कोटिशः नमन...।

वर्णी जी ने बहुत कुछ दिया,
हम भी तो कुछ देना सीखें।
बनें कृतज्ञ , कृतघ्न नहीं,
अर्जन के साथ विसर्जन सीखें।।

संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर: अनुपम एवं आदर्श संत

-डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'

बीसवीं सदी का उत्तरार्द्ध एवं इक्कीसवीं सदी का अब तक का समय लगभग 75वर्ष की अवस्था और उसमें भी 53 वर्ष जिन्होंने संयम की साधना की, अपने सोने जैसे शरीर को तप से तपाकर खरा/शुद्ध बनाया, नीति के पथ पर हजारों किलोमीटर की पदयात्रा करते हुए जो कभी थके नहीं, रुके नहीं बल्कि अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ते रहे; ऐसे महान् अपराजेय साधक का नाम है आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज। वे वर्तमान जीवित संतों में सबसे वरिष्ठ हैं इसलिए संत शिरोमणि आचार्य हैं। मूकमाटी जैसे आधुनिक हिन्दी महाकाव्य के सर्जक हैं इसलिए महाकवि हैं। वे आज भारत,भारती और भारतीयता के पक्ष में खड़े होकर निरन्तर 'हम करें राष्ट्र आराधन' के चिन्तन को जन-जन तक फैलाकर राष्ट्र का पितृवत् संरक्षण कर रहे हैं इसलिए **'राष्ट्र संरक्षक'** हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी, स्वदेशी वस्त्र, अहिंसक खान-पान का प्रचार-प्रसार उनका वैचारिक ध्येय है। वे दया के पालक हैं, अहिंसा और अपरिग्रह में विश्वास रखते हैं। उनके दर्शन करना स्वयं की आत्मा के दर्शन करने जैसा है। वे अपराजेय साधक हैं, जो राष्ट्र के हैं, धर्म के हैं, समाज के हैं और सबके हैं, सबके लिए हैं। उनकी विशेषताओं को हम इस रूप में देख सकते हैं कि वे युगवेत्ता, युगप्रवर्तक, महाकवि, उदात्त चिंतक, अनासक्त, आत्मानुशासक, सकारात्मक विचार विधायक, कालजयी साधक, धर्म-दर्शन विज्ञ, सिद्धान्तवेत्ता, साहित्यकार, महाकवि, जैनाचार के कुशल प्रतिपादक एवं प्रतिपालक, भारत-भारती के प्रतिनिधि प्रस्तौता, स्वावलम्बन एवं स्वदेशी के पक्षधर, सागर के समान गहरे, सुमेरु से अडिग, धरती की क्षमाशीलता और कमल की मनोहारिता के प्रतीक, शक्रेन्द्र के वैभव को पराजित करने वाले, कोई संत हैं, भगवन्त हैं तो वे हैं, भारतीय धर्म और संतों के गुलदस्ते में, मध्य के फूल सदृश्य-आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जिनके गुणानुवाद में जिह्वा भी समर्थ नहीं है। कुन्दकुन्द का कुन्दन उनके कांचनवर्णी रूप में अवतरित हुआ है। उन्होंने अपनी आत्मा को, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र रूप रत्नत्रय से संयुक्त किया है। हम उन्हें प्रणाम करते हैं।

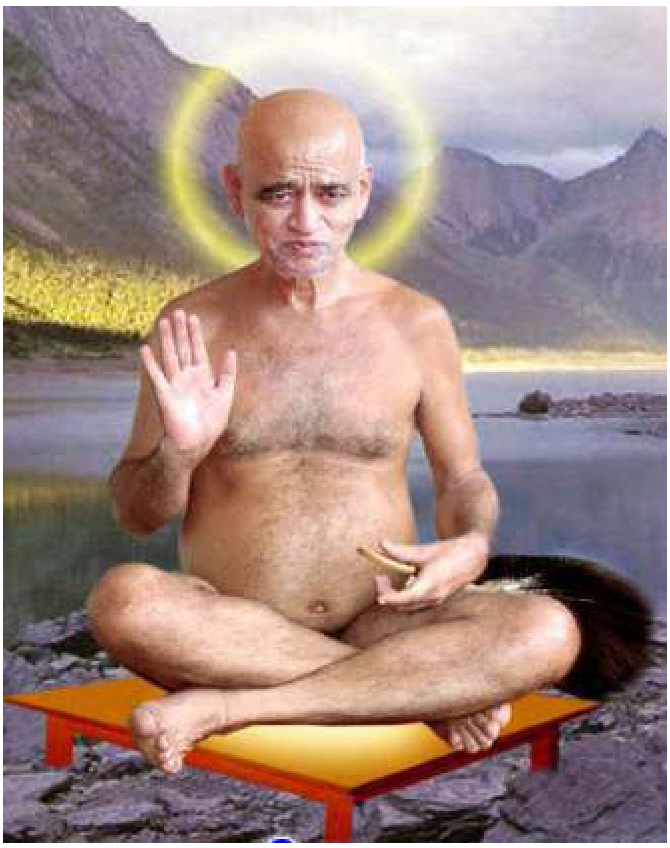

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का जन्म विद्याधर के रूप में आश्विन शुक्ल 15 (शरद पूर्णिमा) के दिन दि. 10 अक्टूबर,1946 को कर्नाटक प्रान्त के बेलगांव जिले के दूधगंगा नदी के तट पर स्थित सदलगा ग्राम में श्री मल्लप्पा जी अष्टगे (मुनि श्री मल्लिसागर जी महाराज) के घर माता श्रीमंती की कुक्षि से हुआ था। उन्होंने आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत लेकर उन्हीं की प्रेरणा से मुनिश्री ज्ञानसागर जी महाराज के पास जाकर विद्याध्ययन किया और दि. 30 जून,1968 (रविवार) को आषाढ़ कृष्ण पंचमी, विक्रम संवत् 2025 को अजमेर (राजस्थान) में मुनि दीक्षा लेकर अपनी संयम यात्रा प्रारंभ की। आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने दि. 22 नवम्बर, 1972 (मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया,संवत् 2029) को अपना आचार्य पद श्री विद्यासागर जी महाराज को देकर स्वयं उन्हें अपना निर्यापकाचार्य बनाया और सल्लेखना धारण की। अपने ही शिष्य को आचार्य बनाकर उनका शिष्यत्व ग्रहण करना विश्व की यह प्रथम घटना थी जिसकी सभी ने सराहना की और आगम की सल्लेखनापूर्व इस व्यवस्था के प्रति बहुमान प्रगट किया।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज देश एवं व्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर हैं। उनका मानना है कि कोई भी देश वास्तविक अर्थों में तब तक स्वतंत्रता का अनुभव नहीं कर सकता जब तक कि वह अपनी भाषा में नहीं बोले, अपनी संस्कृति के अनुरूप शाकाहारी भोजन न करे, स्वयं के द्वारा या स्वयं के लोगों द्वारा निर्मित वस्त्रों को न पहने, स्वावलम्बी न बने। हमें ऐसे ही देश और देशवासियों के निर्माण की आवश्यकता है।

भारतीय वसुन्धरा सदैव संत चरणों का स्पर्श पाकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती रही है। आज भी ऐसे संत हैं जिनके ज्ञान एवं चारित्र के उजास से अनेक नर-नारी प्रभावित हैं, चमत्कृत हैं और उनके प्रति परम आस्था से जुड़े हुए हैं। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने शिष्यों का श्रेष्ठ गुरु बनकर उन्हें अपने ही पदचिह्नों का अनुगामी बनाया। इस तरह वे श्रेष्ठ शिष्य भी हैं और श्रेष्ठ गुरु भी। हम सब उनके इस शिष्य और गुरु दोनों रूपों के प्रति नतमस्तक हैं।

वर्तमान संतों में जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिये जाने का एक प्रमुख कारण और भी है और वह यह है कि वे पुरुषार्थी हैं, मन-वाणी और कर्म की एकता से संपृक्त हैं। उनमें विचारशीलता है, विचारों को कलम में पिरोकर कागज पर उतारने की कला उन्हें आती है। वे सहज कवि भी हैं और सकल कवि भी। इसीलिए वे स्फुट काव्य से लेकर महाकाव्य तक रचते हैं, समीक्षकों, आलोचकों, पाठकों के विचारों से रूबरू भी होते हैं। वे अपने प्रति सजग हैं और दूसरों के प्रति सहिष्णु भी। उनकी आस्था उन्हें साधना पथ की ओर बढ़ाती है। उनकी मान्यता है कि- **आस्था के विषय को आत्मसात् करना हो उसे अनुभूत करना हो तो साधना के साँचे में स्वयं को ढालना होगा सहर्ष!** (मूकमाटी, पृ. 10) यह आस्था क्यों जरूरी है ? इस विषय में आचार्य श्री विद्यासागर जी की मान्यता है कि- **यह बात सही है कि आस्था के बिना रास्ता नहीं मूल के बिना चूल नहीं ।** (मूकमाटी, पृ. 10)

उनके उत्कृष्ट साहित्य को पढ़कर ज्ञात होता है कि उत्कृष्ट साधुता के साथ-साथ जिनमें साहित्य सर्जना के प्रति गहरी रुचि एवं सहज भावाभिव्यक्ति की क्षमता विद्यमान है; ऐसे अनिवार्य भारतीय संत का नाम है आचार्यश्री विद्यासागर। उन्होंने अपनी चर्या और चिन्तन में जो कुछ पाया है वह परम्परा से पुष्ट भी है, आधुनिकता से छिन्न-भिन्न भी नहीं है। वे विरल हैं किन्तु समाज, संस्कृति, राष्ट्र और विश्व से अविरल हैं। उनमें अभिनव कला सर्जक, प्रतिभावान कवि, परखीली दृष्टि संयुक्त चेतस् को जानने की प्रज्ञा विद्यमान है। वे समाज से असंपृक्त रहकर समाज को दिशा देना चाहते हैं और बदले में यदि कुछ चाहते हैं तो वह है समाज सुधार। प्रकृति जीवी, दिगम्बर वेशी, साधनाशील, प्रिय कर्मरत मन वाले वे मूकमाटी से भी बुलवाकर प्रकृति के अन्तस्तल में छिपी अपार संभावनाओं और संवेदनाओं का दिग्दर्शन कराते हैं। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों महनीय है, अनुकरणीय है।

संत सहज होते हैं और उनका जीवन सहजता का प्रतिबिम्ब। वे न तो कानों सुनी कहते हैं न आँखों देखी; बल्कि जिसे भोगा है, अनुभव किया है तथा शास्त्र और तर्क की कसौटी पर कसकर देखा है, उसे ही कहते हैं। इसीलिए उनके विचारों में गंगा जैसी ही नहीं, वरन् गंगोत्री जैसी पावनता होती है।

सागर-सी गहराईयाँ, चिन्तन है अभिराम।
त्याग तपस्या प्रकट है, चहुँदिशि में शुभनाम।।
प्रवचन पारंगत प्रभो, जन-मन के विश्राम।
गुरुवर विद्या धाम को, शत-शत बार प्रणाम।।

नाम, दाम और चाम के प्रलोभन से परे अध्यात्म के परम रसिक श्रमणोत्तम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज नाम से 'यथानाम तथा गुण' हैं, काम से 'सत्यकाम' हैं, काया से जिनवर-सदृश और वाणी से सत्यवादी हैं। उनके वचन 'प्रवचन' और साधना अनुकरणीय है। उनके द्वारा रचित/कथित साहित्य 'साहित्य' के हितकारी भावों से समन्वित है। वे जो कहते हैं वह उनका अनुभव है, उनकी भावना है इसीलिये वे प्राणीमात्र के शुभचिन्तक एवं उद्धार के प्रेरक हैं। आचार्य श्री विद्यासागर जी तो प्राणीमात्र के हितैषी हैं अतः उनके कृतित्व में भी प्राणी-हित सर्वत्र परिलक्षित होता है। आचार्य श्री विशालता और विराटता के दर्शन में विश्वास रखते हैं। यह उचित भी है क्योंकि जिसे आत्मा से परमात्मा तक की यात्रा करनी हो वह तुच्छता में विश्वास कैसे रख सकता है ?

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने गुरु परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज द्वारा प्रदत्त ज्ञान एवं चारित्र को तो अक्षुण्ण रखा ही; साथ ही अपने शुभोपयोग, स्वाध्याय एवं जिनास्था से इसे और और वृद्धिंगत किया। उनकी प्रशस्तचर्या देखकर समाज एवं विद्वानों ने कहा कि यह चतुर्थकाल जैसे श्रेष्ठ संत हैं। उनके जीवनदर्शन को निकट से देखने के लिए, उनके विचारों को सुनने के लिए, उनके चर्या (चारित्र) को ग्रहण करने के लिए जन समुदाय उत्सुक हुआ और उनसे चारित्र ग्रहण की आकांक्षा करने लगा। फलस्वरूप उन्होंने अपने आचार्यत्व का निर्वहन करते हुए शिष्य समुदाय का संग्रहण प्रारंभ किया;जो आज विशाल गुरुकुल के रूप में विद्यमान है।

दिनांक 22 नवम्बर, 2021 को आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आचार्य पदारोहण के 50वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं जिसे संस्कृति शासनाचार्य दिवस के रूप में वर्षभर मनाने की भावना है। आचार्य श्री दीर्घायु हों और आत्मकल्याण के साथ लोककल्याण करें, यही हम सब की भावना है।

समाचार

उत्साह पूर्वक मनाई गई श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी 148 वी जयंती

क्षुल्लक श्री 105 गणेश प्रसाद वर्णी जी महाराज की 148 वीं जन्म जयंती श्री महावीर दिगंबर जैन संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय साढ़ूमल में बड़े हर्षोल्लास के साथ संपन्न की गई। इस अवसर पर विद्यालय के पदाधिकारी एवं अतिथियों ने वर्णी जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन, कलशस्थापन एवं चित्र अनावरण किया। इस मौके पर वर्णी जी के संबंध में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें सर्वप्रथम कु.ज्योति एवं अन्य बच्चों ने अपने विचार रखे। समदर्शी जैन, पंडित संतोष कुमार शास्त्री, प्रधानाचार्य विनीत कुमार जैन, पूर्व प्रबंधक देवेंद्र कुमार जैन, अध्यापक अनीश जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि परम पूज्य वर्णी जी हमारे मडावरा नगर के पास के ही हसेरा ग्राम में आज से 147 वर्ष पूर्व जन्मे थे आज हम उनकी 148 वीं जन्म जयंती मना रहे हैं परम पूज्य वर्णी जी ने शिक्षा का इतना प्रचार प्रसार किया कि हम और हमारी पीढ़ियाँ उन वर्णी जी महाराज के ऋणी हैं जिनके कारण आज हमें शिक्षा प्राप्त हुई है वर्णी जी ने साढ़ूमल, बरुआसागर, ललितपुर एवं बनारस में स्यादवाद महाविद्यालय सहित अनेक विद्यालयों-महाविद्यालयों, पाठशालाओं की स्थापना करने की पावन प्रेरणा दी। वर्णी जी की ही कृपा का प्रसाद है कि आज जैन दर्शन, प्राकृत न्याय आदि बहुत सारे आगम ग्रंथों को जान पा रहे हैं समझ पा रहे हैं उसको पढ़ पा रहे हैं। वर्णी जी की उन्होंने जैन दर्शन के लिए अपना पूरा जीवन ही समर्पण कर दिया था।

ज्ञातव्य है कि उन्होंने एक रुपए के 64 पोस्टकार्ड खरीदकर के 64 श्रेष्ठियों को प्रेषित किए जिसके माध्यम से जो धन संचय हुआ जिससे स्याद्वाद महाविद्यालय वाराणसी की स्थापना की गई, इस विद्यालय का स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा। सभा में संस्था के अध्यक्ष श्री वर्धमान कुमार जी प्रबंधक श्री कमल कुमार जी मंत्री श्री राजेश जैन कोषाध्यक्ष श्री दीपक जैन समाज के अध्यक्ष श्री हुकमचंद जी जैन के साथ-साथ श्री राजेंद्र कुमार जी बंदी, श्री प्रकाश चंद जी गिड़वाहा, श्री जगदंबा प्रसाद चिरवारिया जी एवं अध्यापिका श्रीमती माधुरी श्रीवास्तव, कुमारी समदर्शी जैन, शैलू, पारस , अर्हम, राज, अनुज, श्रीकांत, आदि विद्यालय के बच्चे भी उपस्थित रहे। संचालन प्रधानाचार्य श्री विनीत कुमार जैन एवं कुमारी समदर्शी जैन ने किया।

वर्णी जी का भारतीय प्राच्य विद्याओं के संरक्षण और सम्बर्धन में अनुकरणीय योगदान :

जैन तीर्थवंदना के सम्पादकीय सलाहकार डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्णी जी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से सैंकड़ों पाठशालाएँ, विद्यालय और महाविद्यालय खुले। पूज्य वर्णी जी के दयालुता, निर्लोभता, दृढ़ता आदि गुणों की अपेक्षा उनकी अजातशत्रुता लोकोत्तर है। वर्णीजी ने एकबार जबलपुर में हो रही आमसभा में आजादी के पुजारियों की सहायतार्थ अपनी चादर समर्पित की थी। इस चादर से उसी क्षण तीन हजार रुपये की मिली राशि ने सभा को आश्चर्यचकित कर दिया। पूज्य वर्णी जी का भारतीय प्राच्य विद्याओं के संरक्षण और सम्बर्धन में अनुकरणीय योगदान सदैव इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा।

(पूज्य माताजी के ८८वें जन्मदिवस के अवसर पर विशेष आलेख)

ज्ञानमती माताजी की कृतियाँ सभी निराली हैं, वो तीर्थ बनाती हैं, खुद तीरथ सी प्यारी हैं।।

-विजय कुमार जैन, हस्तिनापुर

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जोकि वर्तमान में जैन जगत में एक सूर्य के समान गगन में दैदीप्यमान हैं। आज ऐसी पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का ६६वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस मनाया जा रहा है। पूज्य माताजी ने आज से ६५ वर्ष पूर्व चारित्रचक्रवर्ती **आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज** की अक्षुण्ण परम्परा के प्रथम पट्टाचार्य **आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज** के करकमलों से राजस्थान के माधोराजपुरा (जयपुर) से दीक्षा प्राप्त कर आर्यिका ज्ञानमती संज्ञा को प्राप्त किया एवं नाम के अनुसार सारे विश्व में एक विराट साहित्य की शृंखला का सृजन किया, जो कि भूतो न भविष्यति। ऐसी ज्ञानमती माताजी जिन्होंने अपनी आचार्य परम्परा के सभी आचार्यों का दर्शन किया, जो कि बहुत बड़ी बात है। आज वर्तमान में लगभग १६०० साधु-साध्वियाँ विराजमान हैं, उन सबमें सबसे प्राचीन दीक्षित पूज्य ज्ञानमती माताजी हैं, ऐसी माताजी के चरणों में हम सभी शत-शत वंदन करते हैं।

आज सारे देश में पूर्णता के नाम पर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का नाम लिया जाता है, जिन्होंने एक नहीं, दो नहीं अनेक ग्रंथों का सृजन अपनी लेखनी के द्वारा करके समाज को एक बड़ा उपहार दिया है। पूज्य माताजी की प्रेरणा से तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं विकास किया गया है। आइए हम जानें उनके बारे में-

जिनके उर से कल कल बहती गंगा की निर्मल धारा।
त्याग और शुभ ज्ञानमणि से जिनने निज को शृंगारा।।
वचनों के मोती बिखरातीं युग की पहली बालसती।
मेरा शत वंदन स्वीकारो, गणिनी माता ज्ञानमती।।

जन्म, वैराग्य और दीक्षा- २२ अक्टूबर सन् १९३४, शरदपूर्णिमा के दिन टिकैतनगर ग्राम (जि. बाराबंकी, उ.प्र.) के श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी के दांपत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में "मैना" का जन्म परिवार में नवीन खुशियाँ लेकर आया था। माँ को दहेज में प्राप्त 'पद्मनंदिपंचविंशतिका' ग्रन्थ के नियमित स्वाध्याय एवं पूर्वजन्म से प्राप्त दृढ़ वैराग्य संस्कारों के बल पर मात्र १८ वर्ष की अल्प आयु में ही शरद पूर्णिमा के दिन मैना ने आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से सन् १९५२ में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रतरूप सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग के नियमों को धारण कर लिया। उसी दिन से इस कन्या के जीवन में २४ घंटे में एक बार भोजन करने के नियम का भी प्रारंभीकरण हो गया।

नारी जीवन की चरमोत्कर्ष अवस्था आर्यिका दीक्षा की कामना को अपनी हर साँस में संजोये ब्र. मैना सन् १९५३ में आचार्य श्री देशभूषण जी से ही चैत्र कृष्णा एकम् को श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र में 'क्षुल्लिका वीरमती' के रूप में दीक्षित हो गईं। सन् १९५५ में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की समाधि के समय कुंथलगिरी पर एक माह तक प्राप्त उनके सान्निध्य एवं आज्ञा द्वारा 'क्षुल्लिका वीरमती' ने आचार्य श्री के प्रथम पट्टाचार्य शिष्य-वीरसागर जी महाराज से सन् १९५६ में 'वैशाख कृष्णा दूज' को माधोराजपुरा (जयपुर-राज.) में आर्यिका दीक्षा धारण करके **"आर्यिका ज्ञानमती"** नाम प्राप्त किया।

विराट साहित्य का सृजन- भगवान महावीर के पश्चात् २६०० वर्ष के इतिहास में किसी भी साध्वी ने इतने विपुल साहित्य का सृजन नहीं किया।

लेकिन दिव्यशक्ति से ओतप्रोत गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जिन्हें माँ सरस्वती का वरदान प्राप्त है, उन्होंने एक नहीं, दो नहीं विभिन्न विधाओं में लगभग ५०० ग्रंथों का लेखन करके समाज को दिया। लेखनी आज भी बंद नहीं है। निरंतर लेखन का कार्य प्रारंभ है। पूज्य माताजी के द्वारा समयसार, नियमसार इत्यादि की हिन्दी-संस्कृत टीकाएँ, जैनभारती, ज्ञानामृत, कातंत्र व्याकरण, त्रिलोक भास्कर, प्रवचन निर्देशिका इत्यादि स्वाध्याय ग्रंथ, प्रतिज्ञा, संस्कार, भक्ति, आदिब्रह्मा, आटे का मुर्गा, जीवनदान इत्यादि जैन उपन्यास, द्रव्यसंग्रह, रत्नकरण्डश्रावकाचार इत्यादि के हिन्दी पद्यानुवाद व अर्थ, बाल विकास, बालभारती, नारी आलोक आदि का अध्ययन किसी को भी वर्तमान में उपलब्ध जैन वाङ्मय की विविध विधाओं का विस्तृत ज्ञान कराने में सक्षम है।

धन्य हैं ऐसी महान प्रतिभावान् सरस्वती माता!

दो बार डी.लिट्. की उपाधि से अलंकृत-किसी महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि में पारम्परिक डिग्रियों को प्राप्त किये बिना मात्र स्वयं के धार्मिक अध्ययन के बल पर विदुषी माताजी ने अध्ययन, अध्यापन, साहित्य निर्माण की जिन ऊँचाइयों को स्पर्श किया, उस अगाध विद्वत्ता के सम्मान हेतु डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा ५ फरवरी १९९५ को डी.लिट्. की मानद् उपाधि से पूज्य माताजी को सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया गया तथा दिगम्बर जैन साधु-साध्वी परम्परा में पूज्य माताजी यह उपाधि प्राप्त करने वाली प्रथम व्यक्तित्व बन गईं। पुन: इसके उपरांत ८ अप्रैल २०१२ को पूज्य माताजी के ५७वें आर्यिका दीक्षा दिवस के अवसर पर तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में विश्वविद्यालय का प्रथम विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित करके विश्वविद्यालय द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

इसी प्रकार से समय-समय पर विभिन्न आचार्यों एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी को न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, आर्यिकाशिरोमणि, गणिनीप्रमुख, वात्सल्यमूर्ति, तीर्थोद्धारिका, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, राष्ट्रगौरव, वाग्देवी इत्यादि अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया है, किन्तु पूज्य माताजी इन सभी उपाधियों से निस्पृह होकर अपनी आत्मसाधना को प्रमुखता देते हुए निर्दोष आर्यिका चर्या में निमग्न रहने का ही अपना मुख्य लक्ष्य रखती हैं।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से विकसित तीर्थ- पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से विकसित अनेक तीर्थ हैं। जिनमें तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियाँ मुख्य हैं और संतों के विषय में यह कहावत भी कही गई है-

जहाँ पड़े चरण संतों के वह रज चंदन बन जाती है।
कल कल करती कालिन्दी मरुस्थल में बह जाती है।।

सर्वप्रथम हस्तिनापुर, जो कि दिल्ली के निकट मेरठ जिले में स्थित है। हस्तिनापुर तीर्थ पर जबसे माताजी के चरण पड़े, उसकी काया ही पलट गई एवं अनेक राजनेताओं का आवागमन एवं माताजी जैसी दिव्यशक्ति का आगमन जैसे तीर्थ के लिए वरदान बन गया और दिन दूनी रात चौगुनी तीर्थ प्रगति को प्राप्त होने लग गई। विश्व की अद्वितीय रचना जम्बूद्वीप का निर्माण एवं स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना का निर्माण व अद्वितीय तीनलोक रचना का निर्माण प्रथम बार हस्तिनापुर में हुआ एवं तीर्थंकर शांति-कुंथु-अरहनाथ की ३१-३१ फुट ऊँची प्रतिमा विराजमान की गई एवं अनेक विकास के कार्य यहाँ पर किये गये।

प्रयाग तीर्थ जो कि प्राचीनता को प्राप्त है। जैन आगम अनुसार वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने सर्वप्रथम यहीं प्रयाग तीर्थ पर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की थी एवं भगवान ने इसी पुण्य भूमि पर उपदेश किया। यहीं पर भगवान ऋषभदेव का प्रथम समवसरण भी आया था एवं प्रयाग में भगवान ऋषभदेव की तपस्थली का निर्माण कार्य किया गया, जिसमें मुख्यरूप से कैलाशपर्वत की रचना की गई, जिसमें त्रिकाल चौबीसी विराजमान की गई एवं वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव की ध्यानस्थ प्रतिमा को विराजमान किया गया एवं भगवान ऋषभदेव समवसरण जिनालय का निर्माण किया गया। आज इलाहाबाद के प्रमुख पर्यटन क्षेत्रों में इसकी गिनती होती है एवं इलाहाबाद एवं सारे देश से यात्रियों का तांता लगा रहता है।

नंद्यावर्त महल तीर्थ, कुण्डलपुर जो कि जैनधर्म के २४वें तीर्थंकर एवं वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर की जन्मभूमि है। पूज्य माताजी की दृष्टि इस ओर गई कि यहाँ पर ११०० वर्ष पुराना प्राचीन मंदिर तीर्थ पर स्थित है, लेकिन तीर्थ का विकास शून्य है। माताजी ने तीर्थ पर चरण रखे एवं उस दिन से इस तीर्थ की कीर्ति सारे देश के अंदर दिग्दिगंत हो गई। आज आने वाले प्रत्येक यात्री को कुण्डलपुर स्वर्ग की तरह प्रतीत होता है। कुण्डलपुर तीर्थ पर नंद्यावर्त महल बनाकर भगवान के जीवन से संबंधित विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है एवं बीचोंबीच भगवान महावीर का विशाल जिनालय निर्मित किया गया है, जिसमें भगवान की श्वेतवर्णी अवगाहना प्रमाण प्रतिमा को विराजमान किया गया है। वहीं दूसरी ओर त्रिकाल चौबीसी के ७२ भगवन्तों का विशाल जिनालय निर्मित किया गया है। गगनचुंबी तीन शिखर से निर्मित यह तीर्थ अपनी छठा पूरे नालंदा जिले में बिखेरे हुए है। यहाँ आने वाला प्रत्येक नागरिक सुखद अनुभूति को लेकर लौटता है। नालंदा ही नहीं अपितु बिहार के प्रमुख पर्यटन को बढ़ावा देता है नंद्यावर्त महल तीर्थ। यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए ४० कमरे एवं सुन्दर भोजनशाला निर्मित है।

तीर्थ विकास के क्रम में अयोध्या में पाँच तीर्थंकर भगवन्तों ने जन्म लिया उन सब जन्मस्थानों पर विशाल जिनालयों का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से

करवाया जा चुका है जिसमें मुख्यरूप से भगवान ऋषभदेव, भगवान अजितनाथ, भगवान अभिनंदननाथ, भगवान सुमतिनाथ एवं भगवान अनंतनाथ हैं। इसके अतिरिक्त काकंदी (गोरखपुर) उ.प्र. में भगवान पुष्पदंतनाथ के जन्मस्थान में विशाल मंदिर निर्माण एवं भगवान पुष्पदंतनाथ की विशाल पद्मासन प्रतिमा को विराजमान किया जा चुका है। इसी क्रम में राजस्थान में श्री महावीर जी, माधोराजपुरा में पारिजात वृक्ष एवं गणिनी आर्यिका ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ, जृम्भिका तीर्थ जमुई ग्राम (बिहार) में भगवान महावीर की केवलज्ञानभूमि पर विशाल प्रतिमा का निर्माण खुले स्थान पर किया गया है, जो कि मेनरोड से दर्शन होता है। सनावद (म.प्र.) में णमोकार धाम तीर्थ का निर्माण, पावापुरी, राजगृही, गुणावां जी एवं सम्मेदशिखर तीर्थों पर भगवन्तों की विशाल प्रतिमा से समन्वित विशाल जिनमंदिर का निर्माण किया गया है। विश्व प्रसिद्ध स्थान शिर्डी (महा.) में निर्मित कमल मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की विशाल पद्मासन प्रतिमा विराजमान की गई एवं तीर्थ सुन्दर तीर्थ विकसित किया गया।

विश्व में सबसे अद्भुत १०८ फुट भगवान ऋषभदेव मूर्ति निर्माण की प्रेरणा पूज्य माताजी के द्वारा सन् १९९६ में प्रदान की गई थी, जो कि अपने आप में एक चुनौती पूर्ण कार्य था। लेकिन पूज्य माताजी की दिव्यशक्ति ने उस कार्य को भी गति प्रदान करते हुए पूर्ण कर दिया। जो कि आज विश्व के पटल पर स्थापित हो गई है, जिसका महापंचकल्याणक दिनांक ११ से १७ फरवरी २०१६ तक व महामस्तकाभिषेक वृहद् स्तर पर सम्पन्न हो चुका है जिस महापंचकल्याणक में १२५ दिगम्बर जैन संतों ने अपनी उपस्थिति एवं सान्निध्य प्रदान किया एवं लाखों लोगों ने सम्मिलित होकर अपने आपको धन्य किया। इसी क्रम में ६ मार्च २०१६ को दिगम्बर जैन समाज की सबसे ऊँची प्रतिमा गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कर ली गई है। इसका सर्टिफिकेट ६ मार्च को लंदन के ऑफिस से आकर कार्यकर्ताओं ने प्रदान किया। इसी उपलक्ष्य में संस्कृति युवा संस्थान के तत्त्वावधान में ब्रिटिश पार्लियामेंट लंदन द्वारा २ जुलाई को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को **भारत गौरव** सम्मान से सम्मानित किया गया। यह जैन समाज के लिए अत्यन्त ही गौरव की बात है।

इसी क्रम में पूज्य माताजी के चरण राजधानी दिल्ली की ओर चल पड़े, जहाँ पर भगवान ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र चक्रवर्ती भगवान भरत ज्ञानस्थली तीर्थ का निर्माण किया गया, जिस पर भगवान भरत स्वामी की ३१ फुट उत्तुंग प्रतिमा विराजमान की गई। जिसका पंचकल्याणक १६ जून से २० जून २०२१ तक हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न किया गया। चक्रवर्ती भगवान भरत के नाम पर ही इस देश का नाम भारत पड़ा। क्योंकि आज वर्तमान में भारत देश के इतिहास में भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत का वर्णन अनेक ग्रंथों में सनातन एवं जैन ग्रंथों में प्राप्त होता है। पूज्य माताजी की प्रेरणा से नई दिल्ली के कनॉट प्लेस स्थित क्षेत्र में इस तीर्थ का निर्माण किया गया है। जो कि एक ऐतिहासिक कार्य है। तीर्थ निर्माण के पश्चात् देश के रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह जी एवं अन्य केन्द्रीय मंत्रीगण पूज्य माताजी के दर्शनों के लिए यहाँ पर पधारे। इस तीर्थ पर विराजमान प्रतिमा सारे देश के लिए सुख-शांति एवं समृद्धि का संदेश प्रचारित एवं प्रसारित कर रही है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का समस्त दिगम्बर जैन समाजों ने बड़े रूप में अभिनंदन समारोह मनाया, जिसमें मुख्य रूप से आजाद मैदान-मुम्बई में, सूरत में नासिक में, लखनऊ में, इंदौर में आदि बड़े-बड़े स्थानों पर पूज्य माताजी का अभिनंदन समारोह मनाया गया। लखनऊ प्रवेश का भव्य नजारा तो देखते ही बनता था, लखनऊ जैन समाज ने ८-१० प्रकार के बैण्ड एवं इतनी पुष्प वृष्टि की कि जिधर माताजी जाती थीं, पुष्प ही पुष्प दिखते थे। यह एक अद्भुत नजारा था। अयोध्या में भगवान सुमतिनाथ का पंचकल्याणक आदि अनेक कार्यक्रम पूज्य माताजी की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न किये गये, जिसमें पूज्य ज्ञानमती माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर में ऐतिहासिक चातुर्मास का जिक्र न किया जाये, तो यह यात्रा अधूरी रह जायेगी, ऐसी विशाल व्यक्तित्व के धनी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी।

तव चरणों में झुके हैं सारे- इसी क्रम में पूज्य माताजी के पास प्रारंभ से ही अनेक राजनेताओं का आना-जाना रहा है, जिसमें मुख्यरूप से राष्ट्रपति श्री रामनाथ जी कोविन्द, महामहिम डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील एवं डॉ. शंकर दयाल शर्मा, प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री राजीव गांधी, श्री नरसिम्हा राव, श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं अनेक प्रदेशों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं अन्य नेताओं ने पूज्य माताजी की विशेष चर्या एवं अद्भुत कार्यकलापों को देखकर प्रभावित हुए एवं पूज्य माताजी की चरण रज को प्राप्त करने के लिए अनेक स्थानों पर आकर दर्शन कर एवं उनका आशीर्वाद प्राप्त कर अपने को धन्य माना।

जहाँ शरदपूर्णिमा का चंदा अमृत बिखेरता है, उसी अमृतकण के रूप में चंदा से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हमें प्राप्त हुई हैं, जिनकी विशेष छठा सारे देश को लाभान्वित कर रही है। आज जिस तरफ भी पूज्य माताजी के चरण पड़ जाते हैं, उनके साथ-साथ हजारों, लाखों चरण चल पड़ते हैं। ऐसी पूज्य माताजी जो कि दीर्घकालीन तपस्या के द्वारा अपने आपको तीर्थ बना लिया है, उनका दर्शन, उनका पूजन सभी के लिए लाभकारी है और हम सभी की यही मंगल कामना है कि माताजी दीर्घकाल तक इसी प्रकार से सारे विश्व को आलोकित करती रहें।

तुम जिओ हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार।

इन्हीं कामनाओं के साथ पूज्य माताजी के चरणों में वंदामि।

संस्कृति संरक्षण में महिलाओं का योगदान

- डॉ. सविता जैन

लेखिका प्रज्ञा पुरुषोत्तम आचार्य श्री योगींद्रसागरजी महाराज की शिष्या होकर वर्तमान में "शीतल तीर्थ" बांसवाड़ा रोड़, रतलाम की अधिष्ठात्री के रूप में अपना पूरा समय संस्कृति संरक्षण में दे रही है। संपादक

सर्वप्रथम हम संस्कृति शब्द की व्याख्या करते हैं। संस्कृति को मानव जीवन के विकास की एक प्रक्रिया माना गया है । संस्कृति मनुष्य का सीखा हुआ व्यवहार है, जो उसे माता-पिता एवं गुरुजनों से प्राप्त होता है । इसे विभिन्न प्रथाएं, कथाएं और परम्पराएं पुष्ट करती हुई एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को उपहार में देती हैं। प्रत्येक समाज की एक संस्कृति होती है, जिससे वह जीने की कला देती है। रॉबर्ट वीरस्टीड के अनुसार – 'संस्कृति वह जटिलता है जिसमें वे सभी वस्तुएं सम्मिलित हैं, जिन पर हम विचार करते हैं, कार्य करते हैं और समाज के सदस्य होने के नाते अपने पास रखते हैं। इसके अंतर्गत हम जीवन जीने, कार्य करने एवं विचार करने के उन सभी तरीकों को सम्मिलित करते हैं, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होते हैं और समाज के अंग बन चुके हैं।'

लेंडिस के अनुसार – 'संस्कृति वह संसार है जिसमें एक व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक निवास करता है, चलता –फिरता है और अपने अस्तित्व को बनाये रखता है' । डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार 'संस्कृति मनुष्य के भूत, वर्तमान और भावी जीवन का सर्वांगपूर्ण प्रकार है। हमारे जीवन का ढंग हमारी संस्कृति है। संस्कृति हवा में नहीं रहती है वह मूर्तिमान होती है। वह जीवन के नानाविध रूपों का समुदाय है'।

भारतीय संस्कृति मूल रूप से दो भागों में विभिक्त रही है

वैदिक संस्कृति – वैदिक संस्कृति बाह्यमुखी ज्यादा है उसका विस्तार भी ज्यादा है। कतिपय परिवर्तन के साथ वैदिक संस्कृति के अनेक घटक रहे हैं। जिनकी विशद चर्चा यहां संभव नहीं है।

श्रमण संस्कृति - श्रमण संस्कृति अथवा जैन संस्कृति। इसे आर्हत संस्कृति अथवा व्रात्य भी कहा जाता है । जो बाह्याभ्यांतर ग्रंथियों का त्याग कर तपश्चरण करते हैं, आत्म साधना में निष्ठ और ज्ञानी एवं विवेकी बने रहते हैं वे श्रमण कहलाते हैं। श्राभ्यंती बाह्याभ्यांतरं तप्श्चरन्तिति श्रमणः। श्रीमद भागवत, ऋग्वेद आदि वैदिक पुराणों में जैन संस्कृति एवं आदि तीर्थंकर की तपश्चर्या की प्रशंसा की गयी है।

संस्कृति व संस्कार में मूलभूत कोई भेद नहीं है। संस्कार एवं संस्कृति दोनों का अर्थ है धर्म। धर्म का पालन करने से ही मनुष्य, मनुष्य है। अन्यथा खाना-पीना, सोना, रोना-धोना, डरना, मरना, संतान पैदा करना ये सभी काम पशु भी करते हैं। संस्कृत में श्लोक है –

आहार निद्रा भयमैथुनं च सामान्यमेतत पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मेण हीना पशुभिः समाना ।।

अर्थात आहार, निंद्रा, भय, मैथुन, मनुष्य व पशु दोनों में स्वाभाविक आवश्यकताएं हैं। केवल धर्म ही मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ बनाता है। धर्म से हीन मनुष्य पशु के समान होता है इसलिए संस्कारों या धर्म के माध्यम से मानव में मानवता आती है। उत्तम से उत्तम कोटि का हीरा जब खान से निकलता है उस समय वह मिट्टी आदि कई दोषों से परिपूर्ण रहता है। पहले उसे सारे दोषों से मुक्त किया जाता है, फिर कटिंग की जाती है। यह समस्त क्रिया गुणाधान संस्कार है। फिर उसके जैसे कई हीरों से मिलकर हार बनाया जाता है। जैसे-जैसे हीरे का गुणाधान संस्कार बढ़ता चला जाता है वैसे-वैसे मूल्य भी बढ़ता चला जाता है। संस्कारों के द्वारा ही उसकी कीमत बढ़ी, संस्कार के बिना कीमत न के बराबर। इसी प्रकार संस्कारों से विभूषित होने पर ही व्यक्ति का मूल्य और सम्मान बढ़ता है। इसीलिए संस्कारों का जीवन में बहुत महत्त्व है। संस्कारों के संरक्षण एवं संवर्धन में महिलाओं का योगदान अत्यधिक रहता है । महिलाओं की प्रवृत्ति प्राचीनकाल से ही धार्मिक संस्कारों के बाहुल्य रही है। नारी जाति सदैव से ही अपनी पारिवारिक, धार्मिक एवं सामजिक परम्पराओं का पालन करने हेतु सजग रहती आई है। तभी तो तीर्थंकर भगवान् के समवशरण में मुनियों से अधिक आर्यिकाएं एवं श्रावकों से अधिक श्राविकाओं की संख्या रही है। वर्तमान समय में नारियों को पुरुषों से प्रतिस्पर्धा करने की बजाए उनकी पूरक बनना चाहिए। स्वयं को मानसिक एवं भावनात्मक रूप से सशक्त बनाना चाहिए। प्रकृति ने नर-नारी में संरचनात्मक भेद दिए हैं। उन्हें कमी के रूप में नही अपितु एक-दूसरे का संपूरक मानकर सामाजिक व्यवस्थाओं में योगदान प्रदान करना चाहिए। संस्कृति के संरक्षण हेतु अपने-अपने दायित्वों का निर्वाह पूर्ण चेतना, सजगता एवं समर्पण से करना चाहिए क्योंकि नर और नारी सृष्टि के दो मुख्य स्तम्भ हैं। ये सृष्टि रुपी गाड़ी के दो पहिये हैं, जिसमें से एक की भी अनुपस्थिति में गाड़ी डगमगाने लगती है। जरा सा असुंतलन होने से गाड़ी चल नही पाती है। समाज रुपी गाड़ी में भी नर और नारी का सामूहिक योगदान ही उसे विकसित करने में सक्षम होता है। संसार में नारी का स्थान सर्वोपरि माना गया है क्योंकि नारी के द्वारा महापुरुषों का जन्म होता है इसलिए नारी जगत की जननी है।

स्त्रीतः सर्वज्ञः नाथ सुरनत चरणों जायतेऽबाध बोधः ।
तस्मात् तीर्थ श्रुताख्यं जनहित कथकं मोक्षमार्गावबोधः ।।
तस्मात् स्मद्धि नाशो भव इरित ततेः सौख्य मस्मादि बोध ।
बुध्वेवं स्त्रीं पवित्रा शिव सुख करणीं सज्जन स्वीकारोति ।।

अर्थात – जिनके चरणों में देव नमस्कार करते हैं, जो अनुपम अबाध ज्ञान के धारी है। जिनसे श्रुतनाम के तीर्थ की उत्पत्ति हुई है, जो वचनों से प्राणियों की भव संतति नष्ट होकर बाधा रहित सुख की प्राप्ति होती है, ऐसे वीतरागी, हितोपदेशी, तीर्थंकर का जन्म नारी से ही होता है । अतएव सज्जन इसकी महत्ता को स्वीकार करते हैं। इसलिए कहा है कि –

नारी – नारी मत कहो नारी नर की खान ।
नारी से ही जन्में तीर्थंकर भगवान ।।

नारी शब्द का संधि विच्छेद करते हैं तो होता है न + अरि = नारी । अर्थात जिसका कोई अरि (शत्रु) नहीं। नारी मन में आकाश का अनंतपना है तो सागर की गहराई है। विशाल हृदय से वह सबको क्षमा करते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ती रहती है। किन्तु नारी शब्द का यह अर्थ तभी ग्रहण किया जा सकता है जब नारी का जीवन संयमित,संस्कारी एवं सशक्त है।

प्राचीनकाल में महिला और पुरुषों को बराबर सम्मान दिया जाता था। नारियों को विशिष्ठ स्थान एवं सम्मान प्राप्त था। तभी तो पौराणिक ग्रंथों में कहा गया है कि –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रफलाः क्रियाः ॥

अर्थात – जहाँ नारियों का आदर सम्मान किया जाता है वहीँ देवताओं का निवास होता है। जहाँ नारियों का सम्मान नहीं किया जाता है वहाँ सभी कार्य निष्फल होते हैं। यहाँ देवताओं के निवास से आशय उनके आशीर्वाद स्वरूप सुख समृद्धि एवं शांति प्राप्त होना है। समस्त धार्मिक एवं समाजिक क्रियाओं की पूर्णता भी स्त्री व पुरुष दोनों को साथ करने पर मानी गई है।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर, विश्वगुरु, प्रजापति, श्री ऋषभदेव भगवान ने वर्तमान सृष्टि के आरंभ में भी नारियों के महत्त्व को स्वीकार करते हुए नारियों को शिक्षा एवं निर्णय लेने का अधिकार प्रतिपादित कर दिया था। उन्होंने महिला सशक्तिकरण का उपदेश ही नहीं दिया बल्कि उसका अनुकरण भी किया। उन्होंने अपने 101 पुत्रों के साथ दोनों पुत्रियों को शिक्षित किया। दोनों पुत्रियों ब्राह्मी एवं सुंदरी को क्रमशः लिपिज्ञान एवं अंकज्ञान प्रदान किया। कालांतर में वह लिपि ब्राह्मी के नाम पर ब्राह्मी लिपि से प्रसिद्ध हुई। यही नहीं दोनों पुत्रियों के विवाह न करने के निर्णय को भी माना। आदि पुराण में भगवान आदिनाथ ने अपनी युगल पुत्रियों को शिक्षित होने की प्रेरणा देते हुए कहा कि

विद्यावान पुरुषों लोके, सम्मानं यादि कोविदैः।
नारी च तदवती धत्तैः, स्त्रीं सृष्टे रग्रिमं पदम ॥

अर्थात – जैसे लोक में विद्यावान पुरुष पंडित के द्वारा सम्मान को प्राप्त होता है वैसे ही विद्यावती नारियां सर्वश्रेष्ठ पद को प्राप्त होती है। आदि पुराण में ही नारी के जननी रूप प्रशंसा सौधर्म इन्द्राणी ने विभिन्न अलंकारों के माध्यम से की है। सती सीता, अंजना, द्रौपदी, मैना, सुलोचना, चंदना, मृगावती आदि अनेक नारियों के धैर्य, संयम, कला-कौशल आदि की प्रशंसा प्रथमानुयोग में विभिन्न आचार्यों ने प्रकरणानुसार की है। प्राचीन काल से ही नारियां भी पुरुषों की भांति विद्या, राजनीति आदि कला-कौशल में निपुण रही है।

पद्मपुराण के अनुसार रानी कैकयी ने युद्धभूमि में महाराजा दशरथ का रथ कुशलतापूर्वक संचालन कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की थी। महारानी मृगावती जो राजा चेटक की पुत्री थी, ने अपने पति शतानीक की मृत्यु के पश्चात् बड़ी धीरता, वीरता एवं बुद्धिमता के साथ न केवल अपने राज्य का संचालन किया अपितु अपने पुत्र एवं सतीत्व की भी रक्षा की।

अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने बेड़ियों में जकड़ी सती चंदनबाला को बंधनमुक्त कर आहार प्राप्त कर महिलाओं के सम्मान, सती की महत्ता को मुखरित किया। मानव समाज की मुख्य धुरी नारी है। जिसके आस-पास समाजजन घूमता रहता है। नारियों की महिमा अनंत है, नारी जननी है, ममता की मूरत है, सहनशीलता की पर्याय है इसलिए पृथ्वी को माता कहा है न कि पिता। हमारे देश की भूमि को भी मातृभूमि कहा है, राष्ट्रभूमि को भारतमाता कहा है। तीर्थंकर परमात्मा के मुख से मुखरित वाणी (दिव्य ध्वनि) को भी जिनवाणी माँ कहा है। इससे अधिक गौरव की और क्या बात हो सकती है।

भारतीय संस्कृति में यद्यपि विभिन्न बाहरी आक्रमणों के पश्चात् नारी के जीवन को विभिन्न बंधनों में बांध दिया किन्तु महिलाओं को प्राथमिकता प्रदान की है जैसे माता-पिता, बहन-भाई, सीता-राम, राधा-कृष्ण, गौरी-शंकर आदि। माँ के रूप में नारी जीवनदायनी है। जिस तरह नदियां निरंतर प्रवाहमान रहकर अपने आस-पास आश्रितों को शुद्ध निर्मल जल से अभिसिंचित कर उन्हें तृप्त करती हैं एवं समस्त गंदगी अपने अंदर समाहित कर आगे बहा ले जाती हैं वैसे ही नारी अपने से जुड़े हर व्यक्ति को अलोकिक कर उनमें ऊर्जा का संचार करती है उनकी गलतियों को नजरअंदाज करते हुए पूरे परिवार को एक सूत्र में बाँध कर रखती है। कहा भी गया है कि हर सफल पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है। चाहे वह उसकी माँ हो, पत्नी हो अथवा पुत्री हो।

नारी का सम्मान करना उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की पुरानी संस्कृति रही है। यह एक बिडम्बना ही है कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यंत विरोधाभासी रही है। एक तरफ तो उसे शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है तो दूसरी ओर उसे बेचारी अबला भी कहा जाता है। इन दोनों अतिवादी धारणाओं ने नारी के स्वतंत्र विकास में बाधा पहुंचाई है।

राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त की नारी के बारे में दो रचनाएँ हमें विरोधाभास का संकेत देती हैं।

एक नहीं दो-दो मात्राएँ नर से बढ़कर नारी।

उक्त पंक्तियों में नारी को महत्ता प्रदान कर उसे प्रतिष्ठित किया है वहीं गुप्तजी ने दूसरी ओर उसके कमजोर पक्ष का बयान निम्न पंक्तियों के द्वारा किया है।

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी ॥

इससे सिद्ध होता है कि समाज की परिस्थितियां किसी भी साहित्यकार को कितना अधिक प्रभावित करती है। निष्कर्षतः नारी को अपनी गरिमा स्वयं को ही बनाकर रखनी चाहिए। प्रकृति द्वारा प्रदत्त कर्त्तव्यों को पूर्ण निष्ठता के साथ निर्वहन करना चाहिए न कि होड़ करके। समाज की आबादी का 50% हिस्सा होने के कारण उसका गौरव, सम्मान, अधिकार सभी समान होना चाहिए। जब-जब नारी रूपी शांत सलिला सरिता ने अपनी सीमाओं का उल्लंघन करना प्रारम्भ कर दिया तब-तब समाज में एक बिखराव उत्पन्न होने लगा है। एक वैचारिक युद्ध प्रारम्भ हो गया है। कभी शिक्षा के नाम पर, कभी समानता के नाम पर, कभी स्वतंत्रता के नाम पर। इसलिए महिला सम्मेलनों के माध्यम से संस्कारी नारी जैसे विषय पर चर्चा करने की आवश्यकता महसूस की जाने लगती है। जब-जब नदियाँ अपने तटों की मर्यादा छोड़कर उन्मुक्त विचरण करने लगी है तब-तब तबाही ही आती है। नदियाँ विनाशकारी हो जाती है, जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। ठीक उसी प्रकार नारियां अपनी मर्यादाओं को छोड़कर उच्छृंखल हो जाती हैं तो उसके परिणाम भयानक हो जाते हैं। परिवार में, समाज में बिखराव विघटन प्रारम्भ हो जाता है। अतएव नारियों का सुशिक्षित एवं संस्कारित होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि कहा है कि एक शिक्षित नारी सौ शिक्षकों का कार्य संपन्न करती है। बालक की प्रथम गुरु माँ को ही कहा है। यह माँ पर निर्भर करता है वह इस बात को कितना महत्त्व प्रदान करती है। संस्कृत का श्लोक है –

प्रशस्ता धार्मिक विदुषी माता, विद्यते यस्य स मातृमान।

धन्य है (प्रशंसनीय है) वह माता जो गर्भाधान से लेकर सम्पूर्ण विद्या प्राप्त करने

तक संतान को सत संस्कारों का उपदेश दे।

इतिहास गवाह है कि सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदन की विधि गर्भावस्था में ही अपने पिता के मुख से सुनी थी। उस समय सुने हुए ज्ञान के कारण महाभारत युद्ध में चक्रव्यूह भेदन हेतु अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में प्रवेश तो कर लिया किन्तु उसमें से निकलने की विधि नहीं जानता था, क्योंकि अर्जुन जब चक्रव्यूह में से निकलने की विधि बता रहे थे तब उसकी माँ सुभद्रा को नींद आ गयी थी फलस्वरूप वह निकलने की विधि सुन नहीं पाया था।

इसी प्रकार जैन धर्म के महानतम आचार्य कुंद-कुंद देव के नाम से आप सभी परिचित हैं। उन्होंने मात्र 11 वर्ष की उम्र में ही दिगम्बर दीक्षा धारण कर ली थी। कथन है उन्होंने कभी वस्त्र धारण ही नहीं किये। इसके पीछे उनकी माँ के आचरण का प्रभाव था। बालक के गर्भ में आते ही माँ मदालसा ने जैन तत्वों का चिंतन, स्वाध्याय आदि शुभ क्रियाओं में अपना समय व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया था। बचपन में वे लोरी सुनाते समय कहती थी कि –

शुद्धोसि, बुद्धोसि निरंजनोसि, संसार माया परिवर्जितासि।
संसार स्वप्न त्यजमोह निंद्रा श्री कुन्दकुन्द जननी मिहभेवमुचे ।।

अर्थात सिद्ध हो, बुद्ध हो, निरंजन हो, संसार माया परिवर्तनशील है। संसार मोहरूप निंद्रा का त्याग करो ऐसा आचार्य कुंदकुंद की माँ कहती।

इतिहास में मराठा नरेश छत्रपति शिवाजी की माँ जीजाबाई का नाम बड़े गर्व से लिया जाता है। जिन्होनें मराठा राज्य की स्थापना हेतु प्रेरित किया। हम इतिहास की बात को छोड़ दें, अभी वर्तमान की सच्चाई को स्वीकारे, हमारी बहिने रातदिन ये बातें करती हैं ये बच्चे इस कंप्यूटर युग में बहुत तेज मस्तिष्क वाले हैं। वे छोटी सी उम्र में मोबाइल उसमें भी स्मार्ट फोन उनसे भी अच्छे तरीके से आपरेट कर लेते हैं और हंस कर कहते हैं की बच्चे टीवी व मोबाइल तो पेट से चलाना सीखकर आये हैं। आप सोचिये कि बच्चे पर गर्भावस्था में ही आपके आचरण का प्रभाव पड़ रहा है। आज की जनरेशन बहुत फास्ट है, धर्म से, संस्कारों से, परिवार से विमुख है? क्योंकि आपने गर्भावस्था के दौरान जो आचरण किया वही सब बच्चों में आनुवांशिक रूप से आया है। अच्छी संतान जन्म देने के लिए यह राजधानी लोकोक्ति प्रसद्धि है।

जननी जने तो ऐसो जन के दाता के शूर।
नई तो रहिये बांझडी मति गंवावे नूर ।।

जीवन की शुद्धि संस्कारों से होती है। जीवन रूपी वृक्ष को फलीभूत करने के लिए संस्कार रूपी बीज आवश्यक है। खेतों में उत्पादित अनाज के कणों को खाकर भूख नहीं मिटाई जा सकती है। अनाज को संस्कारित कर सुपाच्य बनाकर ही खाया जा सकता है। अन्यथा अपक्त्व अनाज खाने से शरीर में कई रोग उत्पन्न हो जायेंगे। शारीरिक कष्ट भी होगा।

मैं यह नहीं कहना चाहती हूँ कि आप संस्कारों के नाम पर महिलाओं को नियम की बेडियों से जकड़ दें। उन्हें आगे बढ़ने से रोके अपितु प्राचीनकाल से ही जैनागम में स्त्री को विद्या, विवाह या अन्य कौशल को प्राप्त करने का अधिकार रहा है। एक संस्कारित नारी में त्याग व तपस्या की ऊँचाई एवं स्नेह की गहराई पाई जाती है। समाज का मुख्य केंद्र बिंदु है नारी। वह अपने माँ, पत्नी एवं पुत्री तीनों रूपों में परिवार को समाज को प्रभावित करती है। आज के बिगड़ते परिवेश में महिला समाज पर यह सबसे बड़ा दायित्व है कि वह अपनी नैसर्गिक विशेषताओं को सुरक्षित रखते हुए उत्तरोत्तर गतिशील रहे। वह अपने ऊपर बुद्धिवाद को, भौतिकवाद को हावी नहीं होने दे। परिवार की जिम्मेदारी के साथ अपनी प्रतिरोधक शक्ति का विकास करें।

मैं बड़े ही व्यथित मन से यह बात भी कहना चाहूंगी कि महिलाओं ने अपनी दुर्बलता में ईर्ष्या व द्वेष के विकार को जो स्थान दिया है उससे मुक्त हो क्योकि नारी ही नारी की शत्रु है। हम अपनी किसी बहिन को, पुत्री को आगे बढ़ते नहीं देख पाती हैं। घर में दादी एवं माँ ही पुत्री की अपेक्षा पुत्र की आशा रखती हैं, पुरुष वर्ग नहीं। सर्वप्रथम हमें अपनी इस सोच को नकारना होगा। परिवारों में आज भी पुत्री व पुत्र के लालन-पालन व शिक्षा में भेदभाव किया जाता है। इसमें सुधार लाना होगा। सभी बच्चों को समान अवसर का सूत्र अपनाना होगा नहीं तो हम महिला सशक्तिकरण के सही अर्थों को न समझकर सिर्फ पुरुषों से मुकाबला करने का माध्यम बना लेंगे। ईर्ष्या, असहनशीलता, अंधानुकरण की वृत्ति, अर्थहीन रूढियों को निभाते रहने का दुर्बल भाव मन से हटाकर समाज की आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक चेतना को जागृत करके ही महिला सही मायनों में अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकती है। अपनी सादगी व सात्विकता से सबका मन मोहकर समाज को एक नई दिशा देने का कार्य महिलाएं कर सकती हैं। इस अवसर पर दक्षिण भारत की प्रसिद्ध नारियों का भी मैं स्मरण करना चाहूंगी। सर्वप्रथम तो दिगम्बर जैन आम्नाय में श्रवणबेलगोल के बाहुवली भगवान के साथ जिनका नाम बड़े आदर श्रद्धा एवं आस्था से लिया जाता है वह है गुल्लिकायज्जी। जिनका नाम इतिहास के पन्नों पर स्वर्णांकित है। क्योंकि जब-जब गोमटेश बाहुवली जी का नाम लिया जायेगा गुल्लिकायज्जी का नाम भी आएगा। गुल्लिकायज्जी भक्ति से पूर्ण, निर्मल परिणामों की धनी, सादगी की प्रतिमूर्ति वह महिला थी जिसे साक्षात बाहुवली भगवान ने अतिशय प्रगटकर सम्मनित किया है।

इसी सन्दर्भ में मध्यप्रदेश जबलपुर की पिसनहारी की मड़िया को सर्वप्रथम बनाने वाली उसी बूढ़ी माँ का स्मरण करना चाहूंगी जिन्होंने चक्की पीस-पीस कर पैसे एकत्रित कर मंदिर का निर्माण करवा दिया फलस्वरूप मंदिर का नाम ही पिसनहारी की मड़िया पड़ गया।

दानशीला अत्तिमब्बे की भी समस्त दिगम्बर जैन समाज ऋणी है। जिन्होंने जैन काशी के रूप में विख्यात मूडबिद्री के दुर्लभ शास्त्र भंडार में १२ शताब्दी की धवलाजी की प्राचीन ताड़पत्र की प्रति दान कर जैन श्रुत संवर्धन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आचार्य अजितसेन एवं वादीभसिंह की गृहस्थ शिष्या विदुषी पंपादेवी ने भी जहाँ जिनालय का निर्माण, संरक्षण करके जहां जैन पुरातत्व का संरक्षण संवर्धन किया वहीं श्रुत को भी समृद्ध किया। अष्ट विधार्चन (महाभिषेक) एवं चतुर्भक्ति नाम की रचना करके। जिनालय निर्माण में दक्षिण भारत के राज्यों की कई महिलाओं ने अपना योगदान प्रदान किया जिनमें महारानी वाचले देवी, चागल देवी, चट्टल देवी, अलिया देवी, विट्ठला देवी, राजकुमारी उदयम्बिका एवं वीराम्बिका प्रमुख है। संक्षिप्ततः जैन संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन में महिलाओं का योगदान अकथनीय, अकल्पनीय एवं बहुआयामी है। इस छोटे से आलेख में उसको समेटना संभव नहीं है।

वाराणसी की प्राचीन जैन संस्कृति एवं परम्परा

प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी, वाराणसी
(राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित)

पिछले अंक से शेष ....

23rd Teerthankar Lord Prashwanath at Bhelupur, Varanasi (Birth Place)

तीर्थंकर के समवशरण में देव, मनुष्य, तिर्यंच आदि सभी जीव समभावपूर्वक बैठकर भगवान की दिव्यध्वनि को सुना।

काशी, कौशल, मथुरा, मगध आदि देशों के प्रायः सभी प्रमुख गणराज्यों में विहार करते हुए, तीर्थकर सुपार्श्वनाथ जन-जन के लिए कल्याणकारी तत्वोपदेश देने लगे। स्वयं की साधना तो चल ही रही थी, धीरे-धीरे मोक्षाभिलाषी जन भी आपसे जुड़ते गए और तत्त्वोपदेश से प्रभावित हो, श्रमण-दीक्षा ग्रहण करते रहे। इस प्रकार आपका एक विशाल संघ बन गया। इस तरह सहस्रों मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका इनके संघस्थ बने। इनके बल आदि 95 गणधर थे। लंबे समय तक भारत के कोने-कोने में तथा देश के सीमांत प्रदेशों में विहार करके वे जीवों को सत्य तथा अहिंसा के मार्ग पर दृढ़ करते रहे। जीवन के अंत में जब आपकी आयु मात्र एक माह अवशिष्ट रही, तब आपने बिहार राज्य के सम्मेद शिखर जैसे परम पवित्र शाश्वत सिद्ध तीर्थ पर जाकर प्रतिमायोग धारण किया और फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को विशाखा नक्षत्र में निर्वाण प्राप्त किया। निर्वाण प्राप्ति की खुशी में सभी देवों और मनुष्यों ने मिलकर बड़ी धूमधाम से आपका निर्वाण महोत्सव मनाया।

जिस तरह आपने संसार के सभी प्राणियों के कल्याण हेतु तत्त्वोपदेश तथा अन्य व्यावहारिक मंगलकारी कार्यों द्वारा जन-जन के हृदय में जो स्थान बनाया, उससे आपकी लोकप्रियता और प्रभाव स्पष्ट है। देश के कोने-कोने में स्थित जिन मंदिरों में आपकी भव्य प्रतिमाएं विराजमान हैं, आपका चिह्न स्वस्तिक है। किंतु पार्श्वनाथ की फण युक्त मूर्तियों की तरह आपकी प्राचीन मूर्तियां भी सर्प फणावली युक्तव भी मिलती हैं। अंतर इतना है कि सामान्यतया जहां पार्श्वनाथ की मूर्तियों में सात संख्या युक्त या इनसे अधिक की फणावली मिलती हैं, वहीं सुपार्श्वनाथ की प्रतिमाओं में पांच संख्यावाली फणावली मिलती है। स्वस्तिक मंगलचिह्न तो आपकी प्रतिभा की स्थायी पहचान है ही, साथ ही आपकी परिकर युक्त प्रतिमाओं के साथ वरनन्दिन नामक यक्ष एवं काली नामक यक्षिणी का भी अंकन होता है कहीं-कहीं यक्ष का नाम विजय और यक्षिणी का नाम पुरुषदत्ता भी मिलता है।

लोकव्यापी प्रभाव और उसके पुरातात्विक प्रमाण --

शौरसेन प्रदेश के, विशेषकर मथुरा क्षेत्र में, आपका व्यापक प्रभाव रहा है। इसका प्रमाण मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त एक स्तूप का ध्वंसावशेष है। यह काफी प्रसिद्ध स्तूप था। **'विविध तीर्थकल्प'** नामक ग्रंथ में आचार्य जिनप्रभ सूरी ने इसका उल्लेख किया है कि इस स्तूप को कुवेरा देवी ने सुपार्श्वनाथ के काल में इसे सोने का बनवाया था और उस पर तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी। यशस्तिलक चम्पू के लेखक आचार्य सोमदेव सूरी ने इस स्तूप के दर्शन किए थे और इसे देवनिर्मित स्तूप बताया है। हरिषेण कथाकोश में वज्रकुमार की कथा के अंतर्गत इस स्तूप को वज्रकुमार के निमित्त विद्याधरों द्वारा निर्मित बताया है जम्बूस्वामी चरित के लेखक महाकवि राजमल्ल के अनुसार इस स्तूप का जीर्णोद्धार साहू टोडर ने भी किया था। कवि ने स्वयं इस स्तूप के दर्शन किए थे। इनके अनुसार वहां उस समय पांच सौ चौदह स्तूप थे। पूर्वोक्त भगवान सुपार्श्वनाथ के स्तूप का एक प्रमाण यह भी है कि कंकाली टीले से एक मूर्ति मिली है, जिसके लेख में इसे

देवनिर्मित कहा गया है। कुषाणकालीन (सन 79) का यह पट्ट इस दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण माना गया है।

इस प्रकार तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ अपने समय के एक प्रभावक, लोककल्याणकारी तीर्थकर थे। तीसरी शती के आचार्य स्वामी समंतभद्र ने स्वयंभू स्तोत्र में आपकी स्तुति करते हुए कहा है--

सर्वस्य तत्वस्य भवान् प्रमाता, मातेव बालस्य हितानुशास्ता।
गुणावलोकस्य जनस्य नेता मयापि भक्त्या परिणूयसेऽद्य ।।5।।

अर्थात् हे सुपार्श्व जिन् ! आप सब तत्वों के प्रमाता हैं। बालक को माता के समान अज्ञानी जनों को हित का उपदेश देने वाले हैं और गुणों की खोज करने वाले जनों के नेता हैं, इसलिए मैं भक्तिपूर्वक आपकी स्तुति कर रहा हूं।

2. अष्टम तीर्थंकर चंद्रप्रभ --

चौबीस तीर्थंकरों की परंपरा में अष्टम तीर्थंकर चंद्रप्रभ का जन्म पौष कृष्णा एकादशी के शुक्रयोग में वाराणसी जनपद में गंगातट पर स्थित चंद्रपुर जो कि वर्तमान में चंद्रावती नाम से प्रसिद्ध है, में हुआ था। इनके पिता चंद्रपुर के इक्ष्वाकुवंशी काश्यप गोत्रीय महाराज महासेन तथा माता महारानी लक्ष्मणा थी। जन्म से ही आप मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारी थे। संसार की परंपरानुसार आप भी अपने पिता के राज्य के उत्तराधिकारी बने। विवाह, पुत्रोत्पत्ति, राज्य का कुशल संचालन, सुखोपभोग आदि सभी कार्य यथासमय संपन्न करते हुए भी आपके अंतरमन में वैराग्य बना रहा। अंततः एक दिन जब वे अपने शृंगार कोष्ठक में बैठ-बैठे दर्पण में मुख देख रहे थे, तभी उम्र का चेहरे पर स्पष्ट प्रभाव देख अंदर का वैराग्य प्रकट हो गया। संसार, शरीर और सुखोपभोग सभी की क्षणभंगुरता जानकर, इन सबके प्रति पूर्ण उपेक्षा हो गई। वे सोचने लगे---

किं सुखं यदि न स्वस्मात्का लक्ष्मीश्चेन्द्रिय चला।
किं यौवनं यदि ध्वसि किमायुर्यदि सावधि। 45/205,
तत्र किं जातमप्येष्यत्काले किंवा भविष्यति।
इति जानन्नहं चास्मिन्मोमुहीभि मुहुर्मुहः। 45/208,
इत्ययेनायते नैवमायासित इवाकुलः।
काललब्धिं परिप्राप्य क्षुण्णमार्ग जिहासया।। 45/211,

(आचार्य गुणभद्र विरचित- 'उत्तरपुराण')

अर्थात् "वह सुख ही क्या जो अपनी आत्मा से उत्पन्न न हो; वह लक्ष्मी ही क्या जो चंचल हो; वह यौवन ही क्या जो नष्ट हो जाने वाला हो? इस संसार में अब तक क्या हुआ है, और आगे क्या होने वाला है यह मैं जानता हूं, फिर भी बार-बार मोह को प्राप्त हो रहा हूं।" इस प्रकार कालाब्धि को पाकर संसार का मार्ग छोड़ने की इच्छा से वे व्याकुल हो गए।

इस प्रकार गहन वैराग्य युक्त चिन्तन के साथ ही उन्होंने अपने वरचंद्र नामक पुत्र का राज्याभिषेक कर पौष कृष्ण एकादशी को अनुराधा नामक शुभ नक्षत्र में नगर के बाहर सर्वहेतुक नामक वन में आकर पंचमुष्ठी केशलुंचन कर अनेक महाराजाओं के साथ जैनेंद्रीय दीक्षा धारण की। दीक्षा लेते ही उन्हें मनःपर्यय ज्ञान हो गया।

Head of Jain Thirthankara Parsvanatha, canopied by a seven hooded snake Medieval, 9th -10th cent. C.E. (Sarnath Museum)

Sculpture showing Jain Tirthankara Shreyansnath standing in Kayotsarga Gupta, 5th -6th cent. C.E. (BirthPlace / Sarnath Museum)

दीक्षा के दो दिन बाद वे 'नलिन' नामक नगर में आहारार्थ पधारे, जहां सोमदत्त नामक राजा ने उन्हें मुनिराज चंद्रप्रभ के रूप में प्रथम बार आहार दिया। इनका विशाल श्रमणसंघ था, जिसमें दत्त आदि 93 गणधरों के अतिरिक्त विभिन्न उच्चज्ञान, ऋद्धि संपन्न अनेक मुनि, आर्यिकायें तथा श्रावक और श्राविकायें थीं।

शेष अगले अंक में

03 अक्टूबर - समाधि दिवस विशेष

मासोपवासी आचार्य श्री 108 सुमति सागर जी महाराज

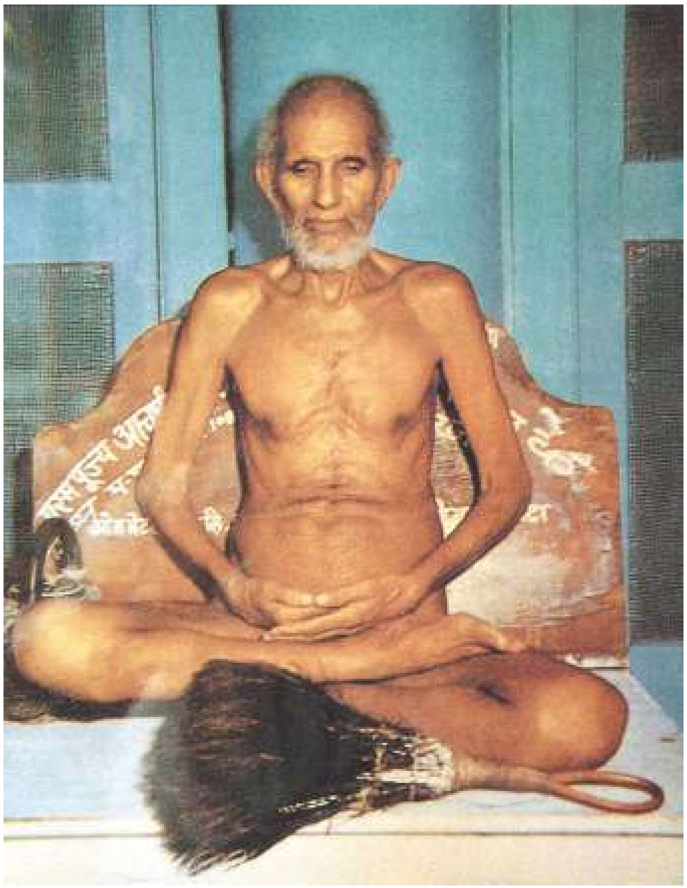

परम पूज्य आचार्य श्री 108 सुमति सागर जी महाराज का जन्म सन 1917 में आसोज सुदी चतुर्थी तदनुसार 20 अक्टूबर 1917 को ग्राम श्यामपुरा, जिला मुरैना (म.प्र.) में हुआ था। आपने सन 1968 में चैत्र शुक्ल त्रयोदशी तदनुसार 11 अप्रैल 1968 को आचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिंड) के कर-कमलों द्वारा मुरैना नगर में ऐलक दीक्षा ग्रहण कर ऐलक श्री वीर सागर जी महाराज नाम पाया। तप-त्याग-साधना के मार्ग पर अविरल बढ़ते हुए आपको लंगोट भी भार स्वरुप लगने लगी। अतः आप सन 1968 में अगहन बदी द्वादशी तदनुसार 17 नवम्बर 1968 को गाज़ियाबाद (उ.प्र.) में मुनि दीक्षा अंगीकार कर आत्म-कल्याण के मार्ग पर आरुढ़ हुए। मुनि रूप में आपने दिगम्बर मुनि की चर्या, उनके मूलगुणों की साधना तथा उनके तपश्चर्या के विविध आयामों से जैन समाज को परिचित करवाया।

इस परंपरा के पंचम पट्टाधीश परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज के प्रमुख शिष्य **परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज** ने पूज्य आचार्य-प्रवर के समाधि दिवस के अवसर पर उनके चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए बताया कि आचार्य श्री 108 सुमति सागर जी महाराज का नाम श्रमण परंपरा के गौरवशाली इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित है। आपकी मुनिचर्या सदा आगमोक्त रही तथा तप व संयम की निरंतर साधना के फलस्वरूप आप मासोपवासी के रूप में प्रख्यात हुए। आपके उपदेशों से अनेक आर्षमार्गानुयायी ग्रंथों का प्रकाशन हुआ। आपने अपने जीवन काल में समस्त भारत में व विशेषतः उत्तर भारत में सतत विहार करते हुए अद्वितीय धर्मप्रभावना संपन्न की।

आपके संस्कारित प्रवचनों व विलक्षण सोच तथा संघ संचालन कुशलता को परखते हुए गुरुवर आचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिंड) की आज्ञानुसार सन 1973 में ज्येष्ठ सुदी पंचमी तदनुसार 6 जून 1973 को चतुर्विध संघ की उपस्तिथि में मुरैना (म.प्र.) में आचार्य पद से सुशोभित कर आपको आचार्य श्री 108 शान्तिसागर जी महाराज (छाणी) की परंपरा में चतुर्थ पट्टाधीश के रूप में प्रतिष्ठित किया। आपके धर्मप्रेरक उपदेशों से प्रभावित होकर समाज ने अनेक विद्यालय, धर्म पाठशालायें, वाचनालय, साधना आश्रम तथा साहित्य प्रकाशक संस्थाओं की स्थापना की। आप एक कुशल जौहरी थे जिन्होंने आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज जैसे अनमोल रत्न को परख कर उन्हें मोक्षमार्ग के दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में तराशा तथा अपना पट्टाचार्य पद प्रदान कर गौरवशाली छाणी परंपरा को आगे बढ़ाया।

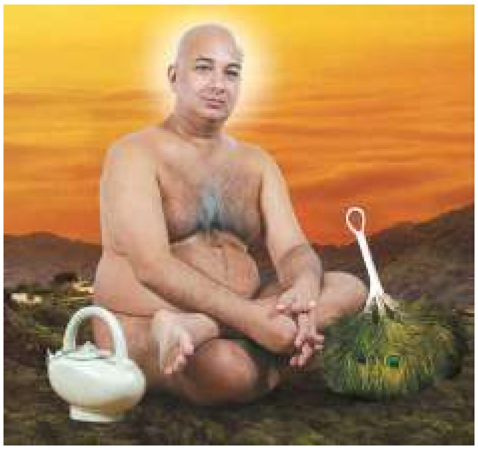

सन 1994 में क्वार बदी त्रयोदशी तदनुसार दिनांक 03 अक्टूबर 1994 को सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी, जिला दतिया (म.प्र.) में समाधिपूर्वक मरण कर इस नश्वर देह का त्याग किया। पूज्य आचार्य श्री का जितना विशाल एवं अगाध व्यक्तित्व था, उनका कृतित्व उससे भी अधिक विशाल था। आचार्य श्री के कर-कमलों द्वारा 90 से अधिक भव्य जीवों ने जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार कर अपना जीवन धन्य किया जिनमें वर्तमान में आचार्य श्री 108 विवेक सागर जी, एलाचार्य श्री 108 नेमि सागर जी, बालाचार्य श्री 108 संयम सागर जी, मुनि श्री 108 वैराग्य सागर जी, गणिनी आर्यिका श्री 105 चन्द्रमति जी, गणिनी आर्यिका श्री 105 कीर्तिमति जी, गणिनी आर्यिका श्री 105 भाग्यमति जी आदि साधनारत हैं। इस गौरवशाली महान परम्परा में वर्तमान में सहस्राधिक दिगम्बर साधु समस्त भारतवर्ष में धर्मप्रभावना कर रहे हैं तथा भगवान महावीर के संदेशों को जनमानस तक पहुंचा रहे हैं।

दिगम्बर जैन नसियां कीर्ति स्तम्भ, आमेर
धार्मिक सामाजिक व पारिवारिक कार्यक्रमों के लिए सर्वोत्तम स्थान

आमेर से बाहर की ओर दिगम्बर जैन मंदिर श्री नेमिनाथ (बाहरली आमेर) से दो किलोमीटर दूर खोर दरवाजे के पास यह नसियां स्थित है। दिगम्बर जैन नसियां कीर्ति स्तम्भ जाने के लिए आमेर की ओर से यह मार्ग है तथा दिल्ली वाईपास हाइवे से भी करीब 1.5 कि.मी. दूर दो रास्ते नसियां कीर्ति स्तम्भ को ओर जाते हैं। सड़क बनी हुई है तथा नसियां के पथ प्रदर्शक बोर्ड भी लगे हुए हैं।

नसियां के मुख्य दरवाजे के सामने, यथा उत्तर-पूर्व की ओर थोड़ी दूरी पर अरावली पर्वतमाला के सघन पहाड़ हैं। इस नसियां का किसने निर्माण कराया इसका तो प्रमाणिक उल्लेख नहीं है, किन्तु नसियां में निर्मित भट्टारकों की चरण पादुकाओं में लिखित लेखों के आधार पर यह माना जा सकता है कि संवत 1678-1691 के बीच तक नसियां का निर्माण हुआ। नसियां के इस मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान् विमलनाथ की श्वेत पाषण पदमासन संवत 1642 की प्रतिष्ठित हैं। इसके अतिरिक्त अन्य प्राचीन प्रतिमाएं संवत 1526, 1650, 1651, 1656 की भी विराजमान हैं।

यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण स्थान यहां का कीर्ति स्तम्भ है। उसी के नाम से यह नसियां प्रसिद्ध है। यह स्तम्भ 12 फीट 6 इंच ऊंचा है व् इसकी गोलाई 4 फीट 7 इंच है। स्तम्भ मकराने के पत्थर का है। इस स्तम्भ के 10 भाग किये गये है। एक-एक भाग में चारों ओर भट्टारकों की 12-12 मूर्तियाँ खड्गासन /पद्मासन उत्कीर्ण हैं। खड्गासन मूर्तियों के हाथ में कमंडलु हैं। मंदिर को जाने वाले मार्ग में सीढ़ियों पर चढ़कर दायीं ओर मंदिर है तथा बायीं ओर ठीक सामने चबूतरे पर एक गुम्बद ढ़का हुआ है। इसमें संवत 04 से संवत 1883 में हुए भट्टारकों का लेख है। इसमें भट्टारक भद्रबाहु से लेकर भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति तक एक से एक भट्टारकों की मूर्तियों के सम्वातोलेख है। **यह बहुत ही महत्वपूर्ण कीर्ति स्तम्भ है। पूरे देश में मूलसंघ के दिगम्बर आम्नाय के भट्टारकों का ऐसा विवरण कहीं नहीं है।** मंदिर में संगमरमर की एक वेदी है, जिस पर सभी प्रतिमाएं विराजमान हैं। इस प्रकार धार्मिक दृष्टि से इस कीर्ति स्तम्भ की नासियाँ का बड़ा महत्त्व है।

नासियाँ 05 बीघा 14 बिस्वा भूमि में फैली हुई है। समाज की संस्थाओं व व्यक्तिगत परिवारों के लिए बहुत ही सुरम्य पिकनिक स्थान भी है। परिसर की पूरी बाउंड्री के चौतरफ नीम, अशोक के वृक्ष लगे हुए हैं। बहुत ही सुन्दर बड़े-बड़े हरे-भरे घास के मैदान हैं। उत्तरी भाग में 24 तीर्थंकरों के ज्ञान कल्याणक वृक्ष उनके विवरण सहित लगे हुए हैं। कोई भी कार्यक्रम करने के लिए बहुत बड़ा साउंड प्रूफ हाल है, जिसमें 400 कुर्सियां, पंखे, स्टेज व माइक सिस्टम आदि हैं। हाल के बाहर चारों तरफ बरामदे हैं व बीच में चौक है। बरामदों में भी पंखे लगे हुए हैं। नासियाँ में आने वाले व्यक्तियों के ठहरने के लिए लेट-बाथ युक्त 04 कमरे हैं, जिनमें डबल बेड, बिस्तर व फर्नीचर आदि उपलब्ध हैं। प्रत्येक कमरे में पेंट्री की सुविधा भी है। एक कमरा बिना लेट-बाथ के भी है। पिकनिक वालों के लिए दो सुन्दर रसोईयां, खाना बनाने के लिए बर्तन, टेबिल, कुर्सियां आदि उपलब्ध है। नसियां में 04 बोरिंग है तथा एक बहुत पुराने समय का कुआं है। कुए के जगत पर भी संगमरमर पत्थर जड़ा दिया गया है। कुए में मावठा की एक सीर आती है, जिससे बराबर मीठा पानी उपलब्ध रहता है।

मंदिर के पूर्वी भाग में करीब एक फर्लांग दूर भट्टारकों की 4 छत्रियां बनी हुई है। मंदिर से वहाँ तक जाने के लिए 10 फीट चौड़ा रास्ता है, जिसके दोनों तरफ अशोक के वृक्ष लगे हैं। यह रास्ता कश्मीर की झलक देता है। इस रास्ते के दोनों ओर जो खाली जगह है, उसमें सघन वृक्षावली की गयी है, जिसमें आंवला, नीबू, अर्जुन, बेल, सीताफल, शहतूत के वृक्ष लगे हुए हैं। यहाँ आने वाले वाहनों के पार्किंग की व्यवस्था है। मुख्य द्वार व मंदिर के बीच में भी जगह है तथा दक्षिणी भाग में भी बड़े गेट से निकलकर पार्किंग की व्यवस्था है।

यहाँ धार्मिक, सामाजिक व पारिवारिक कार्यक्रम के लिए सर्वोत्तम स्थान है और जयपुर में जैन समाज का सबसे सुंदर स्थान है। यहाँ वैवाहिक कार्यक्रम भी सुविधाजनक तरीके से हो सकते हैं। दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, युवा मंडल, महिला मंडल, मंदिरों के प्रतिनिधियों से हमारा अनुरोध है कि इस नसियां में आकर अपने कार्यक्रम आयोजित करें। बरसात के मौसम में तो

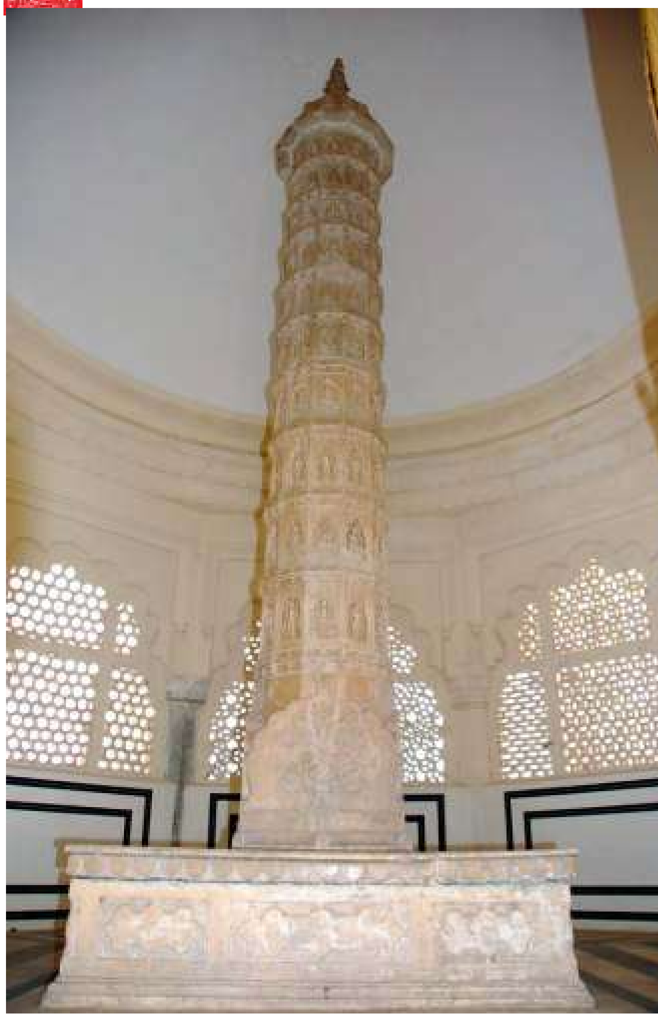

यहाँ का दृश्य देखने लायक हो जाता है।

यह नसियां दिगम्बर जैन मंदिर श्री नेमिनाथजी (सांवलाजी) आमेर प्रन्यास के अंतर्गत है तथा इसका प्रबंध प्रबंधकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा किया जाता है।

दिगम्बर जैन श्री नेमिनाथ (सांवलाजी) आमेर प्रन्यास के प्रबंधकर्ता प्रबंधकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा आमेर के चन्द्रप्रभ मंदिर के भूमितल पर स्थित हाल में तथा उसके बाहर खाली स्थान पर खंडित मूर्तियों का संग्रहालय स्थापित किया जा रहा है। काफी संख्या में पाषाण व धातु की मूर्तियाँ तथा यंत्र भी प्राप्त हो गये हैं। वर्ष 2021 के अन्दर-अन्दर इन मूर्तियों को इस संग्रहालय में प्रतिष्ठापित कर दिया जाएगा।

देश के सभी मंदिरों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि यदि उनके यहाँ कोई खंडित प्रतिमाएं हैं तो उन्हें विवरण सहित भिजवाने का कष्ट करें, जिससे कि उनको इस संग्रहालय में प्रतिष्ठित कर हमारी इस प्राचीन धरोहर को दर्शनार्थियों को देखने का अवसर मिल सके। मूर्तियाँ एवं मूर्तियों की सूचना भिजवाने के लिए संपर्क कर सकते हैं।

संपर्क सूत्र –

श्री महेंद्र कुमार पाटनी, मानद मंत्री (9829499222)

श्री कपिल जैन, व्यवस्थापक (9680749305)

बारहवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य की निर्वाण भूमि (मंदारपर्वत) पर चढ़ाया गया निर्वाण लाडू

क्षमावाणी के पावन अवसर पर बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने किया रोपवे का उद्घाटन

बारहवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी की तप, ज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक भूमि श्री मंदारगिरि जी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र (मन्दारपर्वत), बौंसी, जिला- बांका (बिहार) में दिनांक १९ सितम्बर को अनंत चतुर्दशी के दिन मोक्ष कल्याणक के अवसर पर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया तथा २१ सितम्बर को क्षमावाणी के पावन अवसर पर जैन धर्मावलंबियों को बिहार सरकार की ओर से 700 फिट लंबे रोपवे का सौगात मिला। तीन धर्मो का संगम कहे जाने वाले इस पर्वत पर रोपवे के निर्माण से वृद्धजनों को यात्रा करने में काफी सुविधा मिलेगी।

बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मानद मंत्री श्री पराग जैन ने मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार से रोपवे के उद्घाटन के क्रम में तीर्थ विकास हेतु निवेदन किया जिसे मुख्यमंत्री ने ध्यानपूर्वक सुनते हुए काफी उत्साह दिखाया तथा बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मानद मंत्री श्री पराग जैन एवं प्रबंध कमेटी की ओर से मुख्यमंत्री को अंगवस्त्र तथा मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया।

सिद्धक्षेत्र के दर्शन कर आह्लादित हुए मुख्यमंत्री : भगवान वासुपूज्य स्वामी की तप, ज्ञान एवं मोक्ष भूमि के दर्शन के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जिनमंदिर की प्राचीनता तथा प्राकृतिक सौंदर्य की काफी तारीफ की।

बिहार राज्य में राजगृहजी के बाद यह दूसरा रोपवे मन्दारपर्वत पर बनाया गया। रोपवे के निर्माण से पंचतीर्थ की यात्रा को आने वाले जैन तीर्थयात्री आगे की वंदना करने में समय की काफी बचत कर पायेंगे। जानकारी साझा करते हुए श्री पराग जैन ने बताया कि कमेटी की ओर से मोक्ष कल्याण मन्दिर के परिसर में चार कमरों का जीर्णोद्धार यात्रियों के सुविधा हेतु कराया गया है। पैदल यात्रा करने वाले यात्री इसका लाभ ले पायेंगे तथा मंदिर के सुरक्षा की दृष्टि से भी कमरों का निर्माण होना अति आवश्यक था। इस कार्यक्रम को महीनों पहले से सफलतापूर्वक संपन्न कराने में प्रबंधक श्री कमल जैन, श्री संजीव जैन, श्रीकांत जैन तथा कुण्डलपुर के प्रबंधक श्री जगदीश जैन, श्री बैजनाथ, श्री मनोज जैन की अहम भूमिका रही। उक्त जानकारी श्री रवि कुमार जैन राजगीर/पटना ने दी।

श्रद्धांजलि

श्री राजेन्द्र जैन महावीर सनावद के पूज्यनीय पिता श्री पूरनचंद जी जैन का निधन

हमेशा सकारात्मक सोच व आध्यात्मिक चिंतन में लीन रहने वाले स्वर्गीय पूरन चंद जी ने निर्विवाद रूप से 40वर्ष तक जैन सिद्ध क्षेत्र पावागिरिजी ऊन की सेवा कर एक मिसाल कायम की। संयमित जीवन शैली के चलते आप पूर्णतः स्वस्थ व प्रसन्न थे ,अभी तक उनकी आँखों पर चश्मा तक नहीं लगा था और वे घण्टों पुस्तक पढ़ते रहते थे। हमेशा हसमुख रहकर वे पुस्तकों के प्रेमी थे जो विरासत में अपने पुत्र को विशाल पुस्तकालय भेंट कर गए।

कई सम्मानों से सम्मानित हुए श्री जैन कहते थे कि आपका काम आपको सम्मान दिला देता है उसके लिए मंच पर नहीं लोगों के मन में स्थान होना चाहिए।

तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार **दिवंगत आत्मा के प्रति भावभीनी श्रृद्धांजलि** समर्पित करता है।

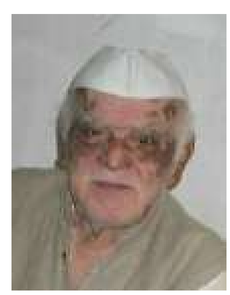

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शनार्थ पधारे केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह

१८ सितम्बर २०२१ को भारत के केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह एवं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी चौहान आचार्यश्री १०८ विद्यासागर जी महाराज ससंघ के दर्शन करने जबलपुर स्थित तिलवारा घाट पधारे। गृहमंत्री जी ने आचार्य श्री के चरणों में श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। गृहमंत्री अमित शाह एवं आचार्य श्री के बीच धार्मिक चर्चा के साथ देश कल्याण की योजनाओं पर चर्चा हुई। गृहमंत्री अमित शाह के साथ मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, श्री प्रहलाद पटेल सहित अनेकों राजनेता एवं समाज के प्रतिष्ठित लोग उपस्थित रहे।

स्वस्तिधाम जहाजपुर क्षेत्र में दर्शनार्थ पहुंचें लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश बिरला

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने जहाजपुर स्थित भगवान मुनिसुव्रतनाथ (स्वस्तिधाम) दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र में पहुँचकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के दर्शन किये। वहां भव्य मंदिर के दर्शन तथा क्षेत्र में विराजमान आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र बहुत जल्द देश के प्रमुख धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में उभरेगा ही साथ बिरलाजी ने कहा कि अतिशय क्षेत्र लोगों में आध्यात्मिक चेतना जागृत करने के साथ क्षेत्र के विकास में भी अहम भूमिका निभा रहा है। इस दौरान क्षेत्र कमेटी ने उन्हें 7 नवम्बर को होने वाले कार्यक्रम में भी निमंत्रित किया। उनके साथ अतिथियों के रूप में भीलवाड़ा भाजपा जिला अध्यक्ष लादूलाल तेली, भाजपा मंडल अध्यक्ष रामप्रसाद टाक, नेनवी ग्रामीण मंडल अध्यक्ष अखिलेश जैन, राकेश मडिया कोटाक्षेत्र पधारे।

क्षेत्र समिति के अध्यक्ष श्री विनोद टोरडी तथा श्री धनराज, श्री नेमीचंद, श्री भानु कुमार, श्री ज्ञानेंद्र जैन, श्री पारस, श्री महावीर एवं भाजपा नगर महिला अध्यक्षा श्रीमति अंतिमा जैन ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

आचार्य श्री १०८ सुनीलसागर जी महाराज के रजत संयम वर्ष का प्रारम्भ किया गया

भगवान महावीर का दर्शन देता है कल्याण की प्रेरणा- ओम बिरला

पर्यूषण पर्व के समापन की बेला और क्षमावाणी के अवसर पर कोटा शहर के तलवंडी और महावीर नगर स्थित जैन मंदिर में आयोजित कार्यक्रमों में लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला शामिल हुए। तलवंडी स्थित जैन मंदिर में मुनि श्री संबुधसागर जी महाराज और मुनि श्री सक्षमसागर जी महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री बिरला ने कहा कि पर्यूषण पर्व तप, संयम और तपस्या के माध्यम से शरीर और आत्मा की शुद्धि का पर्व है। भगवान महावीर के सिद्धांत और विचार हमें सत्य और सेवा के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति का मार्ग दिखाते हैं। महावीर नगर स्थित जैनमंदिर में आयोजित कार्यक्रम में स्पीकर बिरला जी ने कहा कि दुनिया में खुशहाली अहिंसा और शांति के मार्ग पर चलकर ही आ सकती है। भारत और यहां के संतों के विचारों को पूरी दुनिया ने अपनाया है। सामूहिकता की भावना के साथ जैन दर्शन हमें समाज के कल्याण की प्रेरणा देता है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चित्र का अनावरण कर उनकी वंदना की। मुनि श्री संबुधसागर जी महाराज ने आचार्य श्री सुनील सागर द्वारा रचित पुस्तके श्री बिरला को भेंट की। इससे पूर्व लोकसभा अध्यक्ष का मंदिर समिति की ओर से स्वागत किया गया।

हरियाणा के पलवल में खुदाई से प्राप्त आदिनाथ, पार्श्वनाथ एवं अन्य प्रतिमाएं

पलवल हरियाणा में भूगर्भ से जैन प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। पद्मासन मुद्रा में प्राप्त भगवान आदिनाथ की प्रतिमा है। एक प्रतिमा पारसनाथ की खंडित प्रतिमा प्राप्त हुई है। तीर्थंकर मूर्ति के साथ ही प्रतिमायें देवियों की प्राप्त हुई हैं।

मुनिपुगंव श्रीसुधासागर जी महाराज का ३९वां दीक्षा दिवस भक्तों ने श्रद्धा से मनाया

गुरुदेव के लिए देशभर से चाँद खेड़ी पहुँचे श्रद्धालु

अतिशय क्षेत्र चन्द्रोदय तीर्थ चाँदखेड़ी में चातुर्मास कर रहे परम पूज्य मुनि पुगंव श्री १०८ सुधासागरजी महाराज का ३९ वां दीक्षा दिवस भक्तों ने चाँदखेड़ी पहुँच कर पूरे श्रद्धा भक्ति से गुरु गुण गान दिवस के रूप मनाया।

जगत कल्याण की कामना के लिए शान्तिधारा- जगत कल्याण की कामना के लिए मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज के दीक्षा दिवस पर प्रथम कलश श्री अशोक पाटनी आर. के. मार्बल किशनगढ़, द्वितीय कलश श्री हुकम काका अध्यक्ष चाँदखेड़ी कमेटी ने सौभाग्य प्राप्त किया।

नवधा भक्ति के साथ गुरु देव की महा पूजा का सौभाग्य श्री राजेन्द्र कुमार जी, श्री प्रकाश जी, श्री हुकम जी काका अध्यक्ष चाँदखेड़ी कमेटी ने प्राप्त किया। श्री शैलेंद्र श्रृंगार के मधुर भजनों के मध्य जल समर्पित करने का सौभाग्य पुण्योदय वालिका छात्रावास की अध्यक्षा श्रीमती रानी जैन हरसौरा चंदन को श्री गोपाल जी एडवोकेट अक्षत, पुष्पों से आराधना का अवसर थूवोनजी कमेटी के प्रचार मत्री श्री विजय धुर्रा. दीप से एवं धूप से श्री राजेन्द्र हरसौरा, नैवेध से श्री प्रतीक वैभव हरसौरा व महाअर्घ समर्पित करने का सौभाग्य श्री हुकम काका को प्राप्त हुआ।

श्री पंकज भीलवाड़ा व श्री शैलेन्द्र श्रृंगार के मधुर भजनों पर भक्ति करने का सौभाग्य श्री अशोक पाटनी (आर. के. मार्बल) श्री हुकम काका, श्री विजय धुर्रा, श्री शैलेन्द्र जी, श्री विनोद छावड़ा जयपुर, श्री नरेश वेद, श्री आनंद जैन श्री रमाकांत कल्पेस, श्री पी. एम. शाह सहित सुरत, भोपाल, अशोक नगर, इन्दौर, जयपुर, कोटा, गुना, भीलवाड़ा, व्यावर, किशनगड़ आदि स्थानों से आये भक्तों को मिला।

गाँधी जयंती" पर आयोजित "सर्वधर्म प्रार्थना सभा" में डॉ. इन्दु जैन ने किया "महावीराष्टक स्तोत्रम्" का सस्वर पाठ"

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की 152वीं जन्म जयंती पर "गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति" तीस जनवरी मार्ग नई दिल्ली में "सर्वधर्म प्रार्थना" एवं "भक्ति संगीत" का आयोजन किया गया। "अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस" पर अहिंसा का संदेश पूरे विश्व में गूँजा। इस कार्यक्रम में भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू जी एवं सभी विशिष्ट जनों ने बापू की समाधि पर पुष्प अर्पित करके उन्हें नमन किया।

"सर्वधर्म प्रार्थना" में "जैन प्रार्थना" के अंतर्गत कविवर भागचंद्र विरचित संस्कृत भाषा के "महावीराष्टक स्तोत्रम्" का डॉ. इन्दु जैन द्वारा सस्वर पाठ किया गया। "गांधी जयन्ती" पर आयोजित संगीतमय भावांजलि,सर्वधर्म प्रार्थना एवं भक्ति संगीत का सीधा प्रसारण दूरदर्शन के विभिन्न चैनल के माध्यम से जन-जन तक पहुँचा।

सर्वधर्म प्रार्थना के अंतर्गत "विश्व शांति" की भावना से "जैन प्रार्थना" में गुरुजी द्वारा "णमोकार महामंत्र" का पाठ एवं डॉ. इन्दु जैन द्वारा प्रस्तुत "महावीराष्टक स्तोत्रम्" की गूँज दूरदर्शन के माध्यम से लाखों लोगों तक पहुंची।

डॉ. इन्दु ने प्राकृत भाषा में "णमो जिणाणं" तथा "जय जिनेन्द्र" कहने के बाद कहा कि "जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर अन्तिम एवं चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने समस्त विश्व में शांति की स्थापना तथा प्रत्येक प्राणी के कल्याण के लिए" अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रम्हचर्य, अपरिग्रह ये पंच अणुव्रत के सिद्धांत बताए तथा सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र को अपनाकर आत्म कल्याण का मार्ग दिखाया।" अणुव्रत के सिद्धांत तथा रत्नत्रय की महिमा बताकर डॉ. इन्दु ने "महावीराष्टक स्तोत्रम्" का सस्वर पाठ किया तथा समस्त विश्व के कल्याण की भावना अभिव्यक्त की।

भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल, जी. किशन रेड्डी, श्रीमती मीनाक्षी लेखी,पूर्व स्वास्थ्य मंत्री श्री हर्षवर्धन जी, महात्मा गांधी जी की पोती तारा गाँधी जी, उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल जी आदि कई गणमान्य व्यक्तियों ने डॉ. इन्दु द्वारा प्रस्तुत "महावीराष्टक स्तोत्रम्" के सस्वर वाचन की प्रशंसा की तथा भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

गाँधी स्मृति दर्शन समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल जी एवं निदेशक दीपंकर श्री ज्ञान के कुशल नेतृत्त्व में इस पूरे कार्यक्रम का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का कुशलता पूर्वक संचालन राजदीप जी ने किया।

दिल्ली में क्षमावाणी पर्व का आयोजन

क्षमा मांगने का भाव व्यवहार में ही होना चाहिए- स्वास्थ्य मंत्री डॉ.सत्येंद्र जैन

परमपूज्य गणिनी आर्यिका १०५ श्री ज्ञानमती माताजी के मंगल आशीर्वाद से पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी के पावन सानिध्य में दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष श्री रामनिवास जी गोयल की अध्यक्षता में सीएम असेम्ब्ली हॉल में २२ सितम्बर २०२१ को भव्य क्षमावाणी पर्व का आयोजन किया गया। दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री श्री सत्येंद्र जैन बुधवार को दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष राम निवास गोयल और उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के साथ क्षमावाणी पर्व में शामिल हुए। स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने कहा कि क्षमा मांगने के लिए हमें साल भर का इंतजार नहीं करना चाहिए, यह भाव हमारे व्यवहार में ही होना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि क्रोध पर नियंत्रण करने लिए पहले यह समझने की जरूरत है कि हम इंसान हैं। अंत में उन्होंने साल भर के दौरान किसी का जाने-अनजाने में दिल दुखाने के लिए क्षमा मांगी।

दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने कहा कि क्षमा से टूटे दिल फिर से जुड़ जाते हैं और जीवन की गाड़ी पुनः प्रेम की पटरी पर दौड़ने लगती है। इस पर्व पर अपनी आत्मिक शुद्धता के लिए सबसे अपने भूलों की क्षमा याचना की जाती है। यहां माफी मांगने का मतलब यह नहीं कि आप गलत हैं और दूसरा सही।

विधानसभा अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री सतेन्द्र जैन के द्वारा विधानसभा में भारतगौरव गणिनी प्रमुख १०५ श्री ज्ञानमती माताजी का हार्दिक अभिनन्दन एवं पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी के करकमलों में प्रशस्ति पत्र भेंट की गयी।

इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष श्री गजराज गंगवाल, महामंत्री श्री प्रकाशचंद बडजात्या, कोषाध्यक्ष श्री डूंगरमल, श्री शरदराज कासलीवाल, श्री गजेन्द्र बज, श्रीमती सुनीता काला विशिष्ट वक्ता डॉ. वीरसागर जैन, डॉ. जीवन प्रकाश जैन, डॉ. अनेकांत जैन, समायोजन श्री हेमचन्द जैन सहित दिल्ली के अनेक श्रद्धालुजन उपस्थित रहे। संचालन श्री जीवेंद्र जैन ने किया।

कल्याण लोचना के अनुशरण से देश में शांति और व्यक्ति का कल्याण सम्भव : न्यायमूर्ति विमला जैन

ब्रह्मचारी अजित जी द्वारा प्राकृत भाषा में लिखित तथा श्रमणाचार्य श्री विमदसागर मुनिराज द्वारा कृत निर्विकल्पवृत्ति युक्त कल्याण लोचना के अध्ययन-मनन व अनुशरण से देश का विकास, शांति और व्यक्ति का कल्याण सम्भव है। ये विचार शनिवार-रविवार को गुमास्तानगर इंदौर की दिगम्बर जैन समाज द्वारा आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी में न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त किये। न्यायमूर्ति श्रीमती जैन ने कहा कि इसमें श्रमणाचार्यश्री ने सामाजिक समरसता, विश्वशान्ति के उपाय, पर्यावरण का संरक्षण, अनावश्यक जल-दोहन, जल का अपव्यय और अनावश्यक लकड़ी जलाने का निषेध किया है। ऐसा व्यवहार करें जिससे किसी के मन को रंचमात्र भी ठेस न पहुंचे, स्वयं द्वारा किये गये दोष-गलतियों का बखान कर उनकी क्षमा मांगना चाहिए ऐसा लिखा है। इसके अनुसार आचारण करने पर निश्चित ही समाज में शांति और समन्वय की भावना जाग्रत होगी, प्रत्येक स्तर पर द्वेषपूर्ण प्रतिस्पर्धा और घृणा का वातावरण समाप्त होगा।

गुमास्तानगर दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष श्री प्रतिपाल टोग्या एवं महामंत्री सुभाष सेठिया ने बताया कि यहां वर्षायोगस्थ श्रमणाचार्य श्री विमदसागर जी मुनिराज ससंघ के सान्निध्य में ब्र. अनिल मलैया अधिष्ठाता एवं डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज' के संयोजन में २ एवं ३ अक्टूबर को "कल्याण लोचना निर्विकल्पवृत्ति अनुशीलन" विषय पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया गया था।

झारखण्ड सरकार के पर्यटन मंत्री से मिले – श्री एम.पी. अजमेरा सम्मेदशिखर जी के विकास के बारे में की चर्चा

झारखण्ड राज्य पर्यटन, कला संस्कृती एवं अल्प संख्यक कल्याण केबिनेट मंत्री श्री हफीजूल अंसारी जी से 06/10/21 को श्री एम. पी. अजमेरा जी- IAS (Rtd.) संस्थापक अध्यक्ष शिखर संस्कार, श्री सेवायतन एवं प्रमुख संयोजक तीर्थराज समन्वय समिति मधुबन की बहुत ही सकारात्मक बातें तीर्थराज श्री शिखरजी में व्याप्त समस्याओं पर हुई। प्रारंभ में अजमेरा जी ने माननीय मंत्री जी का भाव पूर्ण स्वागत किया। उसके पश्चात वार्ता शुरू हुई उन्होंने रोप वे पर बात की। रोप वे लगवाने पर श्री अजमेरा जी ने स्पष्ट किया कि रोप वे से इस पावन तीर्थ की पवित्रता नष्ट हो जाने का पूरा खतरा है इसीलिये पूर्व में भी अनेक बार चर्चा हुई थी पर जैनियों की पावन धारणा के हित में सरकार ने रोप वे लगवाने का निर्णय स्थगित किया। मंत्री जी अजमेरा जी की राय से सहमत होते हुए कहा कि विभागीय सचिव की भी धारणा ऐसी ही थी। अजमेरा जी ने कहा कि इस विश्व विख्यात पावन तीर्थ को "पावन धार्मिक क्षेत्र" घोषित किया जाए। जहां पारसनाथ के आसपास 6-7 किलो मीटर पर्वत एवं पर्वत के आसपास कहीं भी मांस-मदिरा का व्यवहार न हो- पूर्व की भांति- झारखण्ड सरकार अधि सूचना मिर्गत करें। पहाड़ पर चलंत शोचालय एवं मूत्रालय के लिये दो वाहन सरकार स्वीकृत करें। बिजली की व्यवस्था पूरे मार्ग में हो, कई स्थानों में पेयजल की व्यवस्था हो, अनेक स्थानों में तीर्थ यात्रियों के लिए सेड का निर्माण ह, डाक बंगला तीर्थ यात्रियों के लिए हो एवं रांची से पारसनाथ के लिऐ हेलिकॉप्टर की सुविधा हो एवं अनेक समस्याएं भी है।

डॉ. सुनील 'संचय' द्वारा संपादित कृति का हुआ भव्य विमोचन

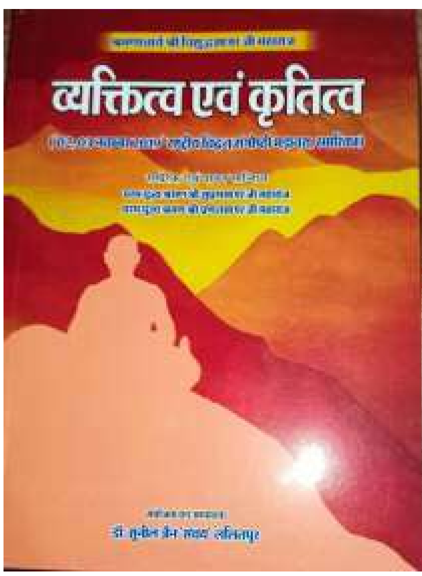

अनेक सामाजिक -धार्मिक सरोकारों से जुड़े नगर के डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर द्वारा संपादित कृति का भव्य विमोचन परमपूज्य मुनि श्री १०८ सुप्रभसागरजी महाराज एवं परमपूज्य मुनि श्री १०८ प्रणतसागरजी महाराज के सान्निध्य में वर्णी भवन मोराजी सागर में किया गया।

विमोचन जैन जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान, श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर , जयपुर के निदेशक डॉ. शीतल चंद्र जैन जयपुर, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रो. फूलचंद्र जैन प्रेमी वाराणसी, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद के अध्यक्ष डॉ श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में प्रोफेसर डॉ. अशोक जैन वाराणसी, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद के महामंत्री ब्र. जय निशांत भैया टीकमगढ़, डॉ. सुशील जैन मैनपुरी, डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती बुरहानपुर, पंडित विनोद जैन रजवांस, श्री राजेन्द्र महावीर सनावद, डॉ. शोभालाल जैन, डॉ. पंकज जैन भोपाल, श्रीमती डॉ. ज्योति जैन खतौली, पंडित मुकेश विन्रम गुड़गांव, पुण्यार्जक परिवार, दीक्षार्थी ब्रह्मचारीगणों आदि ने अपने कर कमलों से किया। प्रथम प्रति मुनिश्री को प्रदान की गई।

कृति के पुण्यार्जक बनने का सौभाग्य डॉ. विरधीचन्द्र जैन, लक्ष्मी जैन, चंद्रकुमार, हंसराज, दीपक जैन, मड़ावरा, डॉ. विकास जैन ललितपुर, डॉ. विशाल जैन परिवार ने प्राप्त किया। संचालन पंडित विनोद जैन रजवांस ने किया।

कृति के संपादक डॉ. सुनील संचय ने बताया कि उक्त कृति में पूज्य मुनि श्री सुप्रभसागरजी महाराज एवं परम पूज्य मुनि श्री प्रणतसागरजी महाराज के सान्निध्य में 2019 में मड़ावरा में आयोजित आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज व्यक्तित्व-कृतित्व विषय पर आयोजित राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत शोधालेखों को प्रकाशित किया गया। उक्त मुनिद्रव्य का 2020 में ललितपुर में चातुर्मास हुआ था।

तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के पदाधिकारियों का मांगीतुंगी, गजपंथा, अंजनगिरि, एवं मांडल आदि तीर्थक्षेत्रों का भ्रमण

तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल, महामंत्री श्री भरत ठोले, मंत्री श्री केतन ठोले, सहकोषाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर, सहकोषाध्यक्ष श्री राजेंद्र कासलीवाल आदि कमेटी पदाधिकारियों ने श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र मांडल को दिनांक 28, 29 अगस्त को भेंट दी। वहां पर तीर्थंकर भगवान की प्राचीन 3 प्रतिमा एवं अन्य कई मूर्तियां विराजमान हैं, जिसमें मूलनायक चंद्रप्रभ मुनिसुव्रतनाथ भगवान, अजीतनाथ भगवान की प्रतिमा एवं अनेक प्राचीन प्रतिमाएं हैं। चमत्कारी श्री पंचक्षेत्रपालजी भी विराजमान हैं, जो भक्तों की मनोकामना पूर्ति करते हैं। यह क्षेत्र धूलिया नेशनल हाईवे से लगभग 15-20 किलोमीटर अंदर है।

यहां क्षेत्र के अध्यक्ष श्री सुनील नानाभाई जैन, विश्वस्त श्री प्रवीण जैन, श्री अनिल जैन व्यवस्थापक पुजारी श्री भरत जैन आदि ने तीर्थक्षेत्र कमेटी पदाधिकारियों का सम्मान किया। तीर्थक्षेत्र कमेटी ने पूर्व में दो कमरे बनाने के लिए जो अनुदान दिया था उसका अवलोकन तीर्थक्षेत्र कमेटी पदाधिकारियों ने किया। यहां पर यात्रियों के लिए दो अटैच कमरे भी बनाये हैं।

उसके पश्चात तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी मांगीतुंगी मे भगवान ऋषभदेव 108 फुट मूर्ति निर्माण कमेटी ऋषभगिरि पधारे, साथ में इंजीनियर सी. आर. पाटील (अधिष्ठाता, ऋषभगिरि-मांगितुंगी तीर्थ) थे। उस समय डॉ. सूरजमलजी जैन इन्होंने सिद्धक्षेत्र के प्रति मालूमात दी। चल रहे नए कार्य की भी मालूमात दी। क्षेत्र पर अभी मूलनायक वेदी का जीर्णोद्धार किया गया है। मंदिर में अंदर बाहर से सुंदर ऐसा सफेद कलर का नया मार्बल लगाया गया है। मंदिर के बाहर के परिसर में पेपरब्लॉक लगा कर कोंक्रीट कराकर सुंदर किया गया है। भगवान मुनिसुव्रतनाथ की यहां पर 21 फुट विशाल प्रतिमा विराजमान है। मंदिर में 24 तीर्थकरों की भी प्रतिमा विराजमान है। आदिनाथ भगवान के मंदिर का भी कार्य किया गया है। मूलनायक पारसनाथ भगवान के वेदी पर स्वर्ण का काम किया गया है। कुछ दिन पहले अद्यक्ष कार्यालय की शुरुआत यहां पर हुई हैं, एवं लगभग 100 नये रूम निर्मित किए गए हैं। पुरानी धर्मशाला का भी रिनोवेशन चल रहा है। सभी कार्य का पदाधिकारियों ने अवलोकन किया। पहाड़ पर होने वाले कार्य को अनुदान देने संबंध में क्षेत्र द्वारा निवेदन दिया गया। उक्त समय डॉ. सूरजमल जैन, महावीर पांडे, पंडीत शैलेश भैय्या जैन आदि उपस्थित थे।

तदोपरांत पदाधिकारी विश्व की सबसे बड़ी मूर्ति 108 फिट भगवान ऋषभदेव के दर्शन करने मांगीतुंगी पहाड़ पर पहुंचे। वहां पर भगवान के मूर्ति निर्माण कार्य को देखा। तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष मूर्ति निर्माण कमेटी के भी महामंत्री है।

इसके पश्चात दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र चंद्रगिरी चांदवड में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कासलीवाल से चंद्रगिरी के संबंध में चर्चा की। उन्होंने कुछ दिन पूर्व भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से संबद्धता करने हेतु अपना निवेदन कमेटी को दिया है, उसमें कुछ त्रुटियां हैं, उन्हे जल्द से जल्द

पूर्ण करके देने हेतु कमेटी ने कहा है। सभी पदाधिकारियों ने चांदवड णमोकार तीर्थ पर विराजमान परमपूज्य सारस्वताचार्य श्री देवनंदी जी गुरुदेव के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। बाल ब्रह्मचारिणी वैशाली दीदी जो तीर्थक्षेत्र कमेटी की मंत्री है, वह भी वहां पर उपस्थित थी। कई बातें आचार्य श्री ने तीर्थक्षेत्र कमेटी को बताई। तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल द्वारा हो रहे कार्य की जानकारी अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल ने आचार्य श्री को दी। आचार्य श्री ने संतोष व्यक्त किया।

ततपश्चात सभी पदाधिकारी गजपंथा सिद्धक्षेत्र, म्हसरूल, नासिक पहुंचे। वहां पर तीर्थक्षेत्र कमेटी उपाध्यक्ष श्री पवनजी पाटणी तथा टेक्निकल कमेटी प्रमुख श्री पारस लोहाडे भी कमेटी सदस्य के साथ उपस्थित रहे। उस समय सिद्धक्षेत्र के उपाध्यक्ष आदरणीय श्री सुमेरजी काला (जो जीएसटी कमिशनर ठाणे रह चुके हैं), महामंत्री श्री सुवर्णा काला, कोषाध्यक्ष श्री धन्नालालजी दगड़े, सहकोषाध्यक्ष श्री प्रकाशजी झांझरी, सहसचिव श्री पारसजी लोहाडे, विश्वस्त डॉ. वीरेंद्र जैन, श्री अनिल सेठी, वंदनाजी लोहाडे आदि ने तीर्थक्षेत्र कमेटी पदाधिकारियों का सम्मान किया। सिद्धक्षेत्र गजपंथा की 26 एकड़ जमीन उसका संरक्षण, संवर्धन, सुरक्षा करने हेतु कंपाउंड के लिये 3 लाख

रुपए का अनुदान पिछले कुछ दिनों में दिया है, उसके प्रति उन्होंने आभार व्यक्त किया एवं सम्मान पत्र अध्यक्ष श्री संजयजी पापड़ीवाल तथा कमेटी के पदाधिकारियों को दिया गया। तत्पश्चात श्री पारसजी लोहाडे, श्री चंद्रशेखरजी कासलीवाल, सौ. सुवर्णाजी काला एवं आदरणीय श्री सुमेरजी काला ने अपने विचार व्यक्त किए। गजपंथा सिद्धक्षेत्र के उपाध्यक्ष एवं तीर्थक्षेत्र महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल ने गजपंथा क्षेत्र पर जो भी कार्य हो उसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी अपना सहयोग देती रहेगी ऐसा कहा। उस समय सौ. सुवर्णाजी काला ने बताया कि कंपाउंड का काम अभी पूरा नहीं हुआ है। थोड़ा काम वहां पर बाकी है उसके लिए उन्हें रु. 7 लाख के अनुदान की आवश्यकता है। अध्यक्ष संजयजी पापडीवाल ने बताया कि आप इस प्रकार का प्रस्ताव हमें भेज दीजिए हम इसे अंचल कमेटी में मंजूर करा कर मुंबई कार्यालय को भेज देंगे। आदरणीय अध्यक्ष श्री शिखरचंदजी पहाड़िया, श्री संतोष जी पेंढारी महामंत्री इनसे सिद्धक्षेत्र के लिये अनुदान लाया जाएगा, ऐसा आश्वासन दिया।

इसके पश्चात तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी तथा गजपंथा सिद्धक्षेत्र के पदाधिकारी प्राचीन अतिशय क्षेत्र अंजनगिरी पहुचे, जहां पर आचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज एवं संघ का आशीर्वाद प्राप्त किया। भगवान शांतिनाथ की 21 फुट विशाल पद्मासन प्रतिमा का दर्शन किया। क्षेत्र पर चल रहे

जीर्णोद्धार कार्य जिसमें मंदिर निर्माण, वेदी निर्माण, नवीन सड़क निर्माण करने हेतु किए जाने वाले कार्य का अवलोकन किया। वहां पर एक 30 कमरे की

धर्मशाला का निर्माण होने वाला है। इसकी क्षेत्र को बहुत आवश्यकता है क्षेत्र के अध्यक्ष श्री पवन पाटणी ने बताया कि यहां पर महीने में लगभग 5000 भक्तगण आते हैं। यह क्षेत्र नासिक मुंबई के पास होने से तथा मांगीतुंगी गजपंथा सिद्धक्षेत्रों को आने वाले सभी यात्रीगण यहां पर भी आते हैं। यहां पर एक लगभग 527 साल पुरानी पारसनाथ भगवान की अतिशयकारी प्रतिमा भी विराजमान है। अंजनगिरी क्षेत्र पर्वत पर दो गुफाएं भी हैं जिसमें प्राचीन प्रतिमा उत्कीर्ण की गई है। श्री सुमेरजी काला ने बताया कि जिला परिषद के माध्यम से सड़क के लिये रु. 35 लाख एवं रु. 15 लाख मंजूर किये गये हैं।

इससे क्षेत्र को काफी फायदा होगा।

सन 2016 में आचार्य श्री गुप्तनंदीजी गुरुदेव द्वारा यहां पर बड़े प्रतिमा का पंचकल्याणक कराया गया उसके पश्चात क्षेत्र का कार्य गति से चल रहा है।

अत्यंत सुंदर तरीके का योग्य नियोजन बध्द कार्यक्रम के अंतर्गत श्री सुमेरजी काला के मार्गदर्शन मे अध्यक्ष श्री पवन पाटणी के नेतृत्व में उनकी टीम जिसमें श्री अनिल सेठी, श्री मनोज गंगवाल, श्री हर्षवर्धन गांधी, श्री दिलीप पहाड़े, श्री अंतिम लोहाडे आदि विश्वस्त उपस्थित थे। क्षेत्रपर प्रतिदिन का हिसाब, उसका वाउचर अत्यंत सुंदर तरीके से किया जाता है। सभी विश्वस्तों को प्रतिदिन क्षेत्र पर क्या-क्या गतिविधियां हुई है, कितने यात्री आए, कितना दान आया है, कितना खर्चा हुआ है, इसका ब्यौरा रात 8:00 से 8:30 बजे मिल जाता है। क्षेत्र पर भोजन की व्यवस्था है। तीर्थक्षेत्र कमेटी पदाधिकारी का सम्मान इस अवसर पर किया। यहां पर श्री पारस लोहाडे, श्री चंद्रशेखर कासलीवाल ने अपने विचार रखे। अंजनगिरी क्षेत्र की ओर से आदरणीय श्री सुमेर काला साहब ने मार्गदर्शन दिया। अंजनगिरी के अध्यक्ष श्री पवनजी पाटनी ने भी क्षेत्र की मालूमात दी एवं श्री विजय लोहाडे ने संचालन किया।

गुरु बनाना आसान है, पर शिष्य बनना आसान नहीं है
- आचार्य श्री 108 परम पूज्य प्रसन्न सागर जी महाराज

आचार्य प्रसन्नसागर जी महाराज का पड़गाहन, आहार चर्या देखने व गुरु दर्शन के लिए देश-विदेश से हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी बीसपंथी कोठी सम्मेद शिखरजी

तपस्वी मौन पूर्वक सिंहनिश्क्रडित व्रत करने वाले अन्तर्मना प्रातः स्मरणीय आचार्य श्री 108 परम पूज्य प्रसन्नसागर जी महाराज का 557 दिनों की मौन साधना और 457 उपवास और 61 आहार के साधक आचार्य श्री ससंघ तीर्थराज सम्मेदशिखर जी के बीसपंथी कोठी में साधना कर रहे है आज आचार्य श्री का 71 वॉ दिन पारणा महोत्सव के रूप में हजारों लोग उपस्थित हुए सभी गुरुवर की एक झलक पाने को लालायित थे यह 9 दिन के बाद पारणा हुई है एवं 9 दिन बाद पुनः पारणा होगी। आचार्य श्री की मौन वाणी है लिखित कहा कि

यह तन विष की बैलरी, गुरु अमृत की खान..
शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान..!

गुरु की तलाश, गुरु की खोज - कितनी कठिन है। उससे भी कहीं ज्यादा कठिन है शिष्य होने की यात्रा। शिष्य बनना भी अपने आप में एक बहुत कठिन साधना है। गुरु बनाना आसान है, पर शिष्य बनना आसान नहीं है। इसलिए आजकल शिष्य बनने की पहल कोई नहीं करता है। सब तरफ गुरु बनाने की पुरजोर कोशिश जारी है। बहुत से लोग मेरे पास आते हैं। और कहते हैं गुरुदेव मैं आपको गुरु बनाना चाहता हूँ-? मैं मना कर देता हूँ। मैं कहता हूँ - कि मेरी दीक्षा को 33 साल हो रहे हैं। हमने आज तक गुरु नहीं बनाया। मैं खुद शिष्य बनकर जी रहा हूँ। शिष्य बनना कठिन काम है। शिष्य बनने में समर्पण है, सरलता है, विनम्रता है। आप शब्द पर गौर करो - मैं आपको गुरु बनाना चाहता हूँ। गुरु बनाने में अहंकार की बू आ रही है, और शिष्य बनने में प्रेम की सुगंध। ये कोई नहीं बोलता है कि मुझे आपका शिष्य बनना है। बनने में अहंकार को चोट पहुँचती है, स्वयं को मिटाना पड़ता है, मिटना कठिन काम है।

जो शिष्य बनने को तैयार है, उनके लिये हमारे द्वार हमेशा के लिये खुले हैं : सौम्य मूर्ति मुनि श्री 108 पीयूष सागर जी महाराज प्रवचन में कहते हैं कि पहले कड़वा सच इस छोटे से वाक्य को, जिन्दगी का मूल मन्त्र बनाओ – बेटा कुल वंश बने यह जरूरी नहीं, वो कुल अंगार भी बन सकता है, जिस घर में बेटी नहीं समझो उसके पास दिल नहीं। हर बेटी के भाग्य में पिता होता है, लेकिन हर माता पिता के भाग्य में बेटी नहीं होती है। बेटी होने का अर्थ है मंगल, शुभ, सौभाग्य,लक्ष्मी का आगमन। क्योंकि कन्या मंगल है, कन्हैया नहीं। कहीं यात्रा में आप जा रहे हो और सामने से कन्या दिख जाए तो यात्रा मंगल ओर शुभमय हो जाती है।बेटों से ज्यादा आजकल बेटियां माता-पिता का ध्यान रखती है बेटों से जीवन चलता है यह गलतफहमी मन से निकाल दो क्योंकि महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, विवेकानंद, दयानंद विनोबा भावे , आचार्य कुंदकुंद, जैसे महापुरुषों के कोई पुत्र नहीं थे फिर भी आज इतिहास में अमरता का वरदान लिए जन जन के प्राणों में बसे हुए हैं इसलिए वंश चलने या डूबने के बात ही व्यर्थ है। वंश की चिंता करना छोड़ो। क्योंकि वंश का अंश कुल दीपक बने ये कोई जरूरी नहीं है, वह कुल अंगार बन सकता है। वंश का अंश परमहंस बने ये कोई जरूरी नहीं वह कंस भी बन सकता है। विवाह के बाद अक्सर बेटा पत्नी का हो जाता है , लेकिन बेटी विवाह के बाद कितना ध्यान अपने मां-बाप का रहती है शायद उतना ध्यान बेटा नहीं रख पाता है। और हां बेटी विवाह के बाद अपने मां-बाप को जमाई के रूप में एक पुत्र दिलाती है। बेटी होने का अर्थ है समर्थन सरलता विनम्रता।

हमारे नये सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

श्री विकास विजयकुमार जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री महेंद्र जी.सी. जैन (राज ब्रदर्स)
विदिशा (म.प्र.)

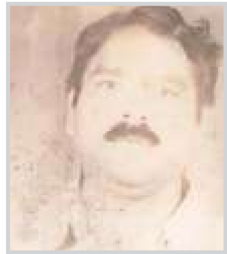
श्री राजेश कुमार किशनचंद मोदी
विदिशा (म.प्र.)

श्री वैभव के. जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री अविनाश नाथमलजी जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री दीपक सुगनचंद्र जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री प्रेमचंद्र रज्जुलाल जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री संकल्प नरेन्द्र जैन
विदिशा (म.प्र.)

सौ. रेखा जिनेश जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री कमल पन्नालाल जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री निर्मल कुमार पूरनचंद जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री जिनेन्द्र कुमार लक्ष्मीचंद जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री रितेश सतीशचंद जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्रीमती सिम्पी नवीन कुमार जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री मनीष भैयालालजी जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्रीमती अलका राकेश कुमार जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्रीमती सुलोचना चेतन जैन
विदिशा (म.प्र.)

कुमारी मानसी सुधीर कुमार जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्रीमती शशि महेंद्र सोधिया
सागर (म.प्र.)

श्री राजेश नाथूलाल जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री उमेश कुमार निर्मल कुमार जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री शिखरचंद पूरनचंद जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री हुकुमचंद प्रदीप कुमार जैन जैतपुरा वाले
विदिशा (म.प्र.)

श्री संतोष मनुलालजी जैन, जखेरिया
विदिशा (म.प्र.)

डॉ. महेंद्र कुमार वंशीधरजी जैन
विदिशा (म.प्र.)

आजीवन सदस्य

श्री विकास प्रकाशचंद जैन
रतलाम (म.प्र.)

श्री दिलीप कुमार ईश्वरचंद जैन
रतलाम (म.प्र.)

श्री ओमप्रकाश कल्याणमल जी गर्ग
रतलाम (म.प्र.)

श्री भूपेंद्र कन्हैयालालजी मोथिया
रतलाम (म.प्र.)

श्री धर्मेश कैलाशचन्दजी जैन कोठारी
रतलाम (म.प्र.)

श्री अनुराग सुन्दरलालजी जैन
रतलाम म.प्र.

श्री ओम मोहनलाल जी अग्रवाल
रतलाम (म.प्र.)

श्री मांगीलाल सेजमलजी जैन
रतलाम (म.प्र.)

श्री राकेश विजय कुमार जैन अग्रवाल
रतलाम (म.प्र.)

श्री अजय ललितकुमारजी बाकीवाला
रतलाम (म.प्र.)

श्री सुशीलकुमार सोभागमल जैन
नई दिल्ली

श्रीमती कमलाबाई रतनचंद्र जैन
खुरई सागर (म.प्र.)

श्री नरेन्द्र कुमार मनोहरलाल टोंग्या (जैन)
भोपाल (म.प्र.)

श्री शैलेन्द्र कुमार केशरीमल जैन
गोहिल विदिशा (म.प्र.)

श्री अनुराग राकेश गोहिल
जबलपुर (म.प्र.)

श्री सुरेशचंद सोहनलाल जैन
भोपाल (म.प्र.)

श्री अलोक नंदन जैन पंचरत्न
भोपाल (म.प्र.)

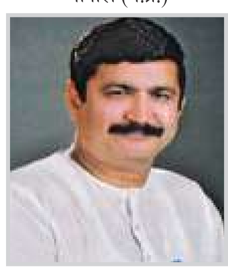
श्री संजय कुमार सुरेशचंदजी जैन
(मुंगावली)भोपाल (म.प्र.)

श्रीमती विजया अभय गोहिल
भोपाल (म.प्र.)

श्री मनोज बाबूलाल प्रधान जैन
भोपाल (म.प्र.)

श्री नितिन कुमार विजय कुमार जैन गोहिल
विदिशा(म.प्र.)

श्री अन्नी अशोककुमार जैन
नरसिंहपुर (म.प्र.)

श्री भरत कांतिलाल दोशी
मुंबई

श्री नीलेश कन्हैयालाल जी पाटनी
जालना (महा.)

श्री सन्देश कोमलचंद जैन
जबलपुर (म.प्र.)

आयोजक - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

अखिल भारतीय निबंध (व्यवहारिक सुझाव) प्रतियोगिता

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित निबंध (व्यवहारिक) प्रतियोगिता जिसमें भाग लेकर प्रतिभागी तीर्थक्षेत्रों के प्रति अपने विचार रख सकते हैं और उपहार भी जीत सकते हैं। यह प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित की जा रही है। आज ही भाग लें-

अंतिम तिथि – ३१ दिसम्बर २०२१   शब्द सीमा – २५०० शब्द

वर्ग १ - उच्च शिक्षित वर्ग

विषय – मानसिक शांति के अनूठे केंद्र - जैन तीर्थ

पात्रता – स्नातक व समकक्ष स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण कोई दिगम्बर जैन पुरुष या महिला

वर्ग २ - पत्रकार वर्ग

विषय - पत्रकारों का जैन तीर्थों के प्रति दायित्व

पात्रता - किसी मान्यता प्राप्त पत्रकार संगठन का सदस्य अथवा किसी रजिस्टर्ड पत्रिका में वर्ष २०१९-२० या दोनों मिला करके न्यूनतम ३ लेख प्रकाशित कराने वाले दिगम्बर जैन पुरुष या महिला

प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार	सांत्वना पुरस्कार
२१,०००/- रू.	११,०००/- रू.	५,०००/-रू.	२,०००/- रू. (दोनों वर्गों से तीन-तीन प्रतिभागी)

सभी विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किया जायेगा

प्रतियोगिता के नियम -

- ❖ लेख A/४ आकर के कागज़ पर सुवाच्च हस्तलिपि या कम्प्यूटर कम्पोज किये होने चाहिए।
- ❖ लेख २ प्रतियों में भेजे जाने चाहिए।
- ❖ लेख के साथ **उच्चशिक्षा वर्ग** हेतु स्नातक या उससे अधिक की योग्यता का प्रमाण भेजें।
- ❖ लेख के प्रथम पृष्ठ पर प्रतिभागी का नाम, उम्र, पता, मोबाइल नंबर व ईमेल आईडी आदि का पूरा विवरण देवें।
- ❖ **पत्रकार वर्ग** हेतु किसी पत्रकार संगठन की सदस्यता का प्रमाण अथवा २०१९-२० में प्रकाशित किसी पंजीकृत पत्रिका में प्रकाशित कोई तीन लेखों की छाया प्रतियों की प्रमाणित प्रति संलग्न करें।
- ❖ दोनों वर्गों में स्त्री पुरुष दोनों भाग ले सकते हैं।
- ❖ समस्त प्राप्त लेख भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की संपत्ति होंगे।
- ❖ प्रतियोगिता में निर्धारित अंतिम दिनांक के बाद भेजे जाने वाले निबंध लेख मान्य नहीं होगें।
- ❖ लेख निम्न पते पर डाक / कोरियर से भिजवाएं। दूरभाष पर पुष्टि संभव नहीं है।

डॉ. अनुपम जैन, प्रधान संपादक – जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुम्बई-४००००४. ईमेल: tirthvandana4@gmail.com

विशेष: प्रतिभागियों के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को अपना निबंध भेजने के लिए दिनांक - ३१ दिसम्बर २०२१ शाम ४ बजे तक का समय निर्धारित है।

श्री सम्मेदशिखरजी स्वर्णभद्रकूट

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी पर्वत स्थित स्वर्णभद्र कूट श्री १००८ पार्श्वनाथ टोंक पर नित्यप्रतिदिन

प्रातः बेला में अभिषेक, शांतिधारा का कार्यक्रम किया जा रहा है|

प्रातः प्रतिदिन विशेष प्रसारण जिनवाणी चैनल पर

आप भी अभिषेक, शांतिधारा के पुण्यार्जक बनकर धर्म लाभ प्राप्त कर पुण्य का संचय करें |

निवेदक

शिखरचंद पहाड़िया — **राष्ट्रीय अध्यक्ष**

संतोष जैन (पेंढारी) — **राष्ट्रीय महामंत्री**

एवं समस्त पदाधिकारी सह सभी अंचल

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

सम्पर्क सूत्र- 9431387704, 9430702400, 9934934643, 9431395497, 9430309610

आचार्य कुंदकुंद की जन्मभूमि कोनाकोंडला (आंधप्रदेश) के विकास के लिए देशभर के जैन समाज से अपील

तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रस्तावित योजना में सहभागी बनें

श्रुतधर आचार्य की परम्परा में कुन्दकुन्दाचार्य का स्थान महत्वपूर्ण है। इनकी गणना ऐसे युगसंस्थापक आचार्यों के रूप में की गयी है, जिनके नाम से उत्तरवर्त्ती परम्परा कुन्दकुन्द-आम्नाय के नाम से प्रसिद्ध हुई है। किसी भी कार्य के प्रारम्भ में मंगलरूप में इनका स्तवन किया जाता है। जिस प्रकार भगवान महावीर, गौतम गणधर और जैनधर्म मंगलरूप हैं, उसी प्रकार कुन्दकुन्द आचार्य भी मंगलरूपी हैं। इन जैसा प्रतिभाशाली आचार्य और द्रव्यानुयोग के क्षेत्र में प्रायः दूसरा दिखलाई नहीं पड़ता।

कुन्दकुन्द भगवान की जन्म भूमि कोनाकोंडला जिसे आज सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध होना चाहिए था आज यह स्थान समाज से विलुप्त सा प्रतीत होता दिखाई दे रहा है।

जैन धर्म को जन-जन तक को पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले हमें अनेकों ग्रन्थ प्रदान करने वाले जिसकी वजह आज हम भगवान जिन की वाणी और जैन धर्म को जान पा रहे, उनके उपेक्षित पड़े जन्म स्थान को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी विकसित करने का कार्य कर रही है और इस कार्य को पूर्ण करने के लिए समस्त समाज का सहयोग अति आवश्यक है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी देश-विदेश की समाज से अपील करती है कि हमारे आचार्यों में सबसे प्रमुख आचार्य कुन्दकुन्द भगवन के जन्म स्थान कोनाकोंडला (आंधप्रदेश) के विकास के लिए तन-मन धन से तीर्थक्षेत्र कमेटी का सहयोग करें।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इस वर्ष पहाड़ के वृक्षारोपण का कार्य शुरू किया है, तमिलनाडु की भांति आंधप्रदेश में प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के आसपास के मुख्य-मार्गों, राजमार्गों पर क्षेत्र का नाम व दूरी दर्शाने वाले बोर्ड लगाए गए हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने कोनाकोंडला विकास के लिए आरंभिक रूप से 2 करोड़ व्यय करके विकास की योजना बनाई है जिसके लिए आप मुक्त हस्त से दान कर इस इतिहासिक कार्य के लिए विभिन प्रकार से सहभागी बन सकते है-

- कोनाकोंडला में एक दिगंबर जैन मंदिर व भव्य स्मारक का निर्माण होना है, मंदिर निर्माण कार्य में आप सहयोगी बन सकते हैं।
- तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए एक धर्मशाला का निर्माण कार्य होना हैं, एक कमरे की सहयोग राशि 5,01,000 /- रु. है।

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2019-21
Jain Tirth vandana, English-Hindi October 2021
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2019-21,
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by **UMANATH RAMAJOR DUBEY** on behalf of **BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE**, Printed at **TRIMURTI PRINTERS**, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRA BAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : **UMANATH RAMAJOR DUBEY**